वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 55 | गुरुवार 30 जुलाई 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

गांव गोद लेकर उन्हें नशामुक्त किए जाने की हो विशेष पहल: बागड़े

राज्यपाल ने प्रदेश के विश्वविद्यालयों के कुलगुरुओं से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से की बैठक

जयपुर. शाबाश इंडिया

राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत राजस्थान में व्यापक अभियान चलाने और विवि द्वारा गोद लिए गांवों को नशा मुक्त किए जाने के लिए प्रभावी प्रयास किए जाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने नशे की अधिकता वाले क्षेत्रों को चिन्हित कर वहां विशेष रूप से कार्यवाही किए जाने पर जोर दिया है। इस संबंध में बुधवार को उन्होंने प्रदेश के विश्वविद्यालयों के कुलगुरुओं से लोकभवन से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए संवाद किया। उच्च शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव कुलदीप रांका भी इस दौरान उपस्थित रहे। विश्वविद्यालयों के कुलगुरुओं से संवाद करते हुए राज्यपाल बागड़े ने कहा कि विश्वविद्यालयों के आस-पास मादक पदार्थ बेचने वाले लोगों की पहचान की जाए। मादक पदार्थों की बिक्री और युवाओं को नशे की लत लगाने में लिप्त लोगों की पहचान के साथ ही ऐसे लोगों को पकड़वाने के लिए विशेष अभियान चलाए जाएं। उन्होंने विश्वविद्यालयों द्वारा गांव गोद लेकर उनके विकास के लिए किए जाने वाले कार्यों में 'नशामुक्त गांव' की सोच भी सम्मिलित किए जाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि गांवो में जाकर वहां के प्रतिष्ठित लोगों से संवाद कर नशा करने वाले और नशीले पदार्थों को उपलब्ध कराने वालों पर नजर रखते हुए पुलिस विभाग के सहयोग से इस संबंध में प्रभावी कार्यवाही की जाए।

'माय भारत पोर्टल' पर अधिक से अधिक पंजीकरण को प्रोत्साहित किया जाए

राज्यपाल ने प्रधानमंत्री मोदी द्वारा नशा मुक्त भारत के लिए देशवासियों को संबोधित किए जाने की चर्चा करते हुए कहा कि विश्वविद्यालयों द्वारा 'माय भारत पोर्टल' पर पहुंचकर अधिक से अधिक पंजीकरण को प्रोत्साहित किया जाए। उन्होंने कहा कि 'नशामुक्त भारत अभियान' को 'माय भारत पोर्टल' से क्रियान्वित किए जाने का सौ सप्ताह का कार्यक्रम चलाया जाएगा। इसमें जन जागरूकता के लिए रैलियां, कार्यशालाएं, प्रचार अभियान चलाए जाएंगे। उन्होंने विश्वविद्यालय स्तर पर नशा मुक्त भारत के लिए प्रभावी गतिविधियों का क्रियान्वयन किए जाने के लिए निर्देश दिए। अतिरिक्त मुख्य सचिव कुलदीप रांका ने 'नशामुक्त भारत' के अंतर्गत विश्वविद्यालय और उच्च शिक्षण संस्थानों के स्तर पर की जाने वाले गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताया।

गुरु पूर्णिमा पर जयपुर जिले में आयोजित हुआ गुरुवंदन कार्यक्रम

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने महंत श्री कजोड़मल महाराज का किया अभिनंदन

संत-महंतों का जनप्रतिनिधियों एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने किया अभिनंदन

जयपुर. शाबाश इंडिया

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर देवस्थान विभाग द्वारा आयोजित गुरुवंदन कार्यक्रम के तहत जयपुर जिले के विभिन्न धार्मिक स्थलों, मठों एवं मंदिरों में संत-महंतों का श्रद्धा एवं सम्मान के साथ अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य भारतीय संस्कृति में गुरु परंपरा के प्रति श्रद्धा प्रकट करना तथा संत समाज के प्रति सम्मान का भाव व्यक्त करना है। इसी क्रम में उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने पापड़ के हनुमान जी के महंत श्री कजोड़मल महाराज का एवं मोती डूंगरी मंदिर, परिसर में जयपुर जिला कलेक्टर संदेश नायक, अतिरिक्त जिला कलक्टर चतुर्थ आशीष कुमार, सहायक आयुक्त देवस्थान विभाग रतनलाल योगी तथा पूर्व विधायक अशोक परनामी ने मंदिर के महंत श्री कैलाश जी महाराज का शॉल, दुपट्टा, श्रीफल एवं सम्मान सामग्री भेंट कर अभिनंदन किया।

धार्मिक स्थलों पर श्रद्धा एवं गरिमा के साथ गुरुजन वंदन कार्यक्रम आयोजित किए गए

देवस्थान विभाग द्वारा जिले के विभिन्न धार्मिक स्थलों पर भी श्रद्धा एवं गरिमा के साथ गुरुजन वंदन कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें प्रमुख रूप से मोती डूंगरी मंदिर, खोले के हनुमान जी मंदिर, वीर हनुमान जी मंदिर, त्रिवेणी धाम, श्री गोविंद देव जी मंदिर, गढ़ गणेश मंदिर, डेहर के बालाजी मंदिर, काले हनुमान मंदिर चाँदी की टकसाल, गुप्त वृंदावन धाम, बस्सी, चाकसू, शाहपुरा, सांगानेर, गोनेर, आमेर, जोबनेर तथा दूदू आदि क्षेत्र के मंदिर एवं मठ शामिल रहे। कार्यक्रमों में जनप्रतिनिधियों, जिला प्रशासन एवं देवस्थान विभाग के अधिकारियों की उपस्थिति में संत-महंतों का सम्मान करते हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की ओर से प्रेषित गुरु वंदन संदेश भेंट किया गया।

वीर शासन जयंती की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ दर्शना जैन,जयपुर

वीर शासन जयंती जैन धर्म का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और पावन पर्व है, जो प्रतिवर्ष श्रावण कृष्ण प्रतिपदा (एकम) को मनाया जाता है यह वह ऐतिहासिक दिन है जब केवलज्ञान प्राप्ति के बाद, तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की प्रथम दिव्य देशना (दिव्य वाणी) खिरी थी। आज 21वीं सदी में जब दुनिया युद्ध, हिंसा, प्रदूषण और भौतिकता से जूझ रही है, तब भगवान महावीर का ''जियो और जीने दो'' का संदेश आज केवल धार्मिक नारा नहीं, बल्कि पूरी मानवता के बचाव का सूत्र बन गया है।

1. अहिंसा का संदेश - युद्ध और हिंसा के युग में

आज दुनिया में हर दिन कहीं न कहीं युद्ध, आतंकवाद, घरेलू हिंसा और सोशल मीडिया पर शब्दों की हिंसा हो रही है। भगवान महावीर ने 2500 साल पहले कहा था - 'सभी जीव जीना चाहते हैं, किसी का वध मत करो।'

1. **वैश्विक स्तर:** रूस-यूक्रेन, इजराइल-गाजा जैसे युद्धों में अहिंसा ही एकमात्र रास्ता है। वीर शासन कहता है - समस्या का समाधान संवाद से, शस्त्र से नहीं।
2. **सामाजिक स्तर:** सड़क पर रोड रेज, स्कूल-कॉलेज में बुलिंग, परिवार में कलह। महावीर का 'क्षमा' का सिद्धांत हमें सिखाता है कि क्रोध का जवाब क्रोध से नहीं, क्षमा से दो।
3. **पर्यावरण स्तर:** पेड़ काटना, जीव-जंतुओं को मारना भी हिंसा है। आज क्लाइमेट चेंज का कारण यही है। जैन धर्म का 'सूक्ष्म जीवों' तक के प्रति दया का भाव आज इकोलॉजी का सबसे बड़ा पाठ है कि असली वीर वही है जो दूसरों को अभय दे।

2. अनेकांतवाद: कट्टरता और नफरत के युग में

आज धर्म, राजनीति और सोशल मीडिया पर ''या तो तुम मेरे साथ हो या मेरे खिलाफ'' वाली सोच बढ़ गई है। इसी से नफरत और ध्रुवीकरण पैदा होता है।

भगवान महावीर का अनेकांतवाद कहता है - सत्य के अनेक पहलू होते हैं। हाथी को 6 अंधे 6 तरह से समझते हैं। कोई भी एक व्यक्ति पूर्ण सत्य का दावा नहीं कर सकता।

- धर्म के नाम पर लड़ाई के बजाय तुम्हारा सच भी सच, मेरा सच भी सच की भावना।
- ऑफिस, परिवार में मतभेद होने पर दूसरे का नजरिया समझना।
- सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग के बजाय संवाद।

सहिष्णुता ही सच्ची धार्मिकता है।

3. अपरिग्रह और सादगी: उपभोक्तावाद के युग में

आज दुनिया जितना ज्यादा, उतना अच्छा के चक्कर में फंसी है। कर्ज लेकर महंगे फोन, गाड़ियां, ब्रांडेड कपड़े। नतीजा - तनाव, डिप्रेशन और पर्यावरण का विनाश।

भगवान महावीर ने अपरिग्रह सिखाया - आवश्यकता से अधिक संग्रह मत करो। दिगंबर मुनि इसी का जीता-जागता उदाहरण हैं। उनके पास कमंडल और मोरपिच्छी के अलावा कुछ नहीं।

वर्तमान प्रासंगिकता

1. मिनिमलिज्म: आज दुनिया "Minimal Living" की बात कर रही है। यही अपरिग्रह है।
2. सस्टेनेबिलिटी: Fast Fashion, E-waste कम करना। प्रकृति का दोहन न करना।
3. मानसिक शांति: जितना कम सामान, उतना कम टेंशन। संतोष ही सबसे बड़ा धन है।

वीर शासन जयंती हमें पूछती है - क्या तुम्हें सच में इसकी जरूरत है?

4. सत्य और अचौर्य - फेक न्यूज और भ्रष्टाचार के युग में

आज व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी, एआई डीपफेक और भ्रष्टाचार ने समाज को खोखला कर दिया है।

महावीर का सत्य = मन-वचन-कर्म से सच बोलना।

अचौर्य = बिना दी हुई एक सुई भी न लेना।

- बिजनेस में पारदर्शिता
- बच्चों को सच बोलना सिखाना
- डिजिटल दुनिया में कॉपी-पेस्ट और क्रेडिट चोरी न करना
- टैक्स चोरी न करना, ये भी अचौर्य का ही रूप है

5. चतुर्विधा संघ की एकता का संदेश

वीर शासन जयंती पर साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका चारों एक साथ आते हैं। कोई भेद नहीं। आज समाज जाति, भाषा, अमीर-गरीब में बंटा है। संघ हमें सिखाता है कि धर्म के मार्ग पर सब बराबर हैं। मुनि महाराज जी तपस्या करते हैं, श्रावक-श्राविका संघ को चलाते हैं। दोनों के बिना शासन नहीं चल सकता।

6. तप, स्वाध्याय और क्षमा

आज की पीढ़ी इंस्टेंट रिजल्ट चाहती है। 10 सेकंड की रील में सब। लेकिन आत्मा की शुद्धि के लिए तप चाहिए। वीर शासन जयंती पर हम उपवास, सामायिक, स्वाध्याय करते हैं। ये हमें डिजिटल डिटॉक्स सिखाता है। दिन में 1 घंटा फोन छोड़कर खुद से मिलना। और सबसे बड़ी बात क्षमा। मिच्छामि दुक्कडम। जान-बूझकर या अनजाने में किसी को दुख दिया हो तो क्षमा मांगना। आज रिश्ते इसी वजह से टूट रहे हैं।

वीर शासन जयंती केवल इतिहास का दिन नहीं है। यह हर साल हमें रिमाइंडर देता है:

1. अहिंसा = विश्व शांति का रास्ता
2. अनेकांत = सहिष्णु समाज का आधार
3. अपरिग्रह = पर्यावरण और मन की शांति

4. सत्य = भरोसेमंद समाज
5. क्षमा = टूटे रिश्तों को जोड़ना

स्वामी विवेकानंद ने कहा था - जैन धर्म ने दुनिया को अहिंसा दी। आज जब अक्, युद्ध और जलवायु संकट के बीच मानवता खड़ी है, तब भगवान महावीर का वीर शासन ही हमें बचा सकता है। इसलिए इस वीर शासन जयंती पर हम सिर्फ पूजा न करें। एक संकल्प लें - मैं एक जीव को भी कष्ट नहीं दूंगा। मैं सच बोलूंगा। मैं कम में संतोष करूंगा। मैं क्षमा करूंगा।

यही सच्ची वीर शासन जयंती होगी।

वीर शासन जयवंत हो! जियो और जीने दो!

अनुशासन और आत्मसंयम का संबंध

''अनुशासन जीवन को दिशा देता है और आत्मसंयम उस दिशा में निरंतर आगे बढ़ने की शक्ति प्रदान करता है।'' मानव जीवन इच्छाओं, भावनाओं, आकर्षणों और चुनौतियों से भरा है। प्रत्येक व्यक्ति सफलता, सम्मान और सुखमय जीवन की कामना करता है, किंतु केवल इच्छा मात्र से यह संभव नहीं होता। इसके लिए अनुशासन और आत्मसंयम जैसे जीवन-मूल्यों को अपनाना आवश्यक है। यही दो गुण श्रेष्ठ व्यक्तित्व, सुदृढ़ परिवार और समृद्ध राष्ट्र की आधारशिला हैं। अनुशासन का अर्थ है–नियमों, कर्तव्यों और मर्यादाओं का पालन करते हुए जीवन को व्यवस्थित ढंग से जीना। वहीं आत्मसंयम का अर्थ है–मन, वाणी, व्यवहार, इच्छाओं और क्रोध पर नियंत्रण रखना। यदि अनुशासन बाहरी व्यवस्था का प्रतीक है, तो आत्मसंयम उसकी आंतरिक शक्ति है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं और एक के बिना दूसरा अधूरा है। वास्तव में अनुशासन की शुरूआत आत्मसंयम से होती है।

जब व्यक्ति अपनी इच्छाओं और भावनाओं पर नियंत्रण रखना सीख लेता है, तभी वह समय का सम्मान करता है, कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करता है और जीवन में नियमितता लाता है। केवल बाहरी नियम स्थायी अनुशासन नहीं ला सकते; वास्तविक अनुशासन भीतर से उत्पन्न आत्मसंयम का परिणाम होता है। आज का युग अनेक आकर्षणों और विचलनों से घिरा है। मोबाइल फोन, सोशल मीडिया और उपभोक्तावादी जीवनशैली व्यक्ति का ध्यान बार-बार भटकाती है। ऐसे समय में आत्मसंयम का महत्व और बढ़ जाता है। जो व्यक्ति क्षणिक सुखों के स्थान पर दीर्घकालिक लक्ष्यों को प्राथमिकता देता है, वही अनुशासित और सफल जीवन जी पाता है। विद्यार्थी जीवन में इन दोनों गुणों का विशेष महत्व है। नियमित अध्ययन, समय की पाबंदी, शिक्षकों का सम्मान और निरंतर अभ्यास अनुशासन के उदाहरण हैं। वहीं आलस्य, समय की बर्बादी और अनावश्यक मनोरंजन से स्वयं को दूर रखना आत्मसंयम का परिचायक है। ऐसे विद्यार्थी केवल परीक्षा में ही नहीं, जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करते हैं। पारिवारिक जीवन में भी अनुशासन और आत्मसंयम मधुर संबंधों की आधारशिला हैं। जब परिवार के सदस्य अपनी वाणी, व्यवहार और क्रोध पर नियंत्रण रखते हैं तथा अपनी जिम्मेदारियों का ईमानदारी से निर्वहन करते हैं, तब परिवार में प्रेम, विश्वास और सौहार्द बना रहता है। समाज और राष्ट्र की उन्नति भी इन्हीं मूल्यों पर आधारित है। यातायात नियमों का पालन, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा, कानून का सम्मान, स्वच्छता और ईमानदारी–ये सभी अनुशासित नागरिक की पहचान हैं। जब व्यक्ति अपने स्वार्थ पर नियंत्रण रखकर राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानता है, तभी सच्चे अर्थों में विकास संभव होता है। इतिहास गवाह है कि महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद तथा अनेक संतों, वैज्ञानिकों और महापुरुषों की सफलता के मूल में अनुशासन और आत्मसंयम का अद्भुत समन्वय था। उनका जीवन बताता है कि महानता का मार्ग आत्मनियंत्रण और नियमित जीवनशैली से होकर गुजरता है। आत्मसंयम इच्छाओं का दमन नहीं, बल्कि उन्हें सही दिशा देने की कला है। इसी प्रकार अनुशासन केवल नियमों का पालन नहीं, बल्कि स्वयं को निरंतर बेहतर बनाने की सतत प्रक्रिया है। जब ये दोनों गुण जीवन का हिस्सा बन जाते हैं, तब व्यक्ति का चरित्र दृढ़ होता है, निर्णय क्षमता परिपक्व होती है और सफलता स्थायी बनती है। आज आवश्यकता है कि बच्चों को बचपन से ही अनुशासन और आत्मसंयम के संस्कार दिए जाएँ। परिवार, विद्यालय और समाज मिलकर ऐसा वातावरण तैयार करें, जहाँ इन मूल्यों को केवल पढ़ाया ही नहीं जाए, बल्कि व्यवहार में भी उतारा जाए। अनुशासन और आत्मसंयम एक ही रथ के दो पहिए हैं। अनुशासन जीवन को दिशा देता है और आत्मसंयम उस दिशा में निरंतर आगे बढ़ने की शक्ति प्रदान करता है। जो व्यक्ति इन दोनों गुणों को अपनाता है, वह स्वयं सफल बनता है और परिवार, समाज तथा राष्ट्र के लिए प्रेरणास्रोत भी बनता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में इन दोनों जीवन-मूल्यों को सर्वोच्च स्थान देना चाहिए, क्योंकि यही सुखी, सफल और सार्थक जीवन का वास्तविक आधार हैं। **– अनिल माथुरः ज्वाला-विहार, जोधपुर**

गुरु पूर्णिमा पर 'गुरु उपकार दिवस' के रूप में मनाया गया मुनि ओंकार सागर जी का दीक्षा दिवस

राघौगढ़. शाबाश इंडिया

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर आचार्य विद्यासागर महाराज के दीक्षित शिष्य मुनि ओंकार सागर जी महाराज का 12वां दीक्षा दिवस राघौगढ़ जैन समाज द्वारा श्रद्धा एवं भक्ति के साथ 'गुरु उपकार दिवस' के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर विद्यासागर भवन में विशाल धर्मसभा आयोजित हुई, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि ओंकार सागर जी महाराज ने कहा कि उनके दीक्षा गुरु आचार्य विद्यासागर महाराज का उन पर अनंत उपकार है। उन्होंने मिथ्यात्व से निकालकर मुनि दीक्षा प्रदान की और मोक्षमार्ग को प्रशस्त किया। उन्होंने कहा कि गुरु तीन प्रकार के होते हैं–पत्थर के समान, मिट्टी के दीपक के समान तथा रत्नदीप के समान। रत्नदीप के समान गुरु स्वयं प्रकाशमान होते हैं और अपने शिष्यों के जीवन को भी ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करते हैं। गुरु के गुणों का वर्णन शब्दों में संभव नहीं है। गुरु की आज्ञा का पालन करना ही उनके उपकार का सच्चा प्रतिदान है। ज्येष्ठ मुनि श्रमण सागर जी महाराज ने अपने उद्बोधन में कहा कि गुरु पूर्णिमा का दिन गुरु महिमा के स्मरण और उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का पर्व है। उन्होंने बताया कि आचार्य विद्यासागर महाराज की दूरदर्शी दृष्टि से मुनि ओंकार सागर जी महाराज एवं उनके मामाजी को अतिशय क्षेत्र बीना बारहा में मुनि दीक्षा प्राप्त हुई। उन्होंने कहा कि जन्म के समय माता प्रथम गुरु होती है और आगे चलकर सद्गुरु ही जीवन का मार्गदर्शन कर माता के समान स्नेह एवं संरक्षण प्रदान करते हैं। यही कारण है कि यह पर्व गुरु पूर्णिमा के रूप में श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है। कार्यक्रम की शुरूआत प्रातः 5:30 बजे मुनि ओंकार सागर जी महाराज की आरती एवं भक्तिभाव से हुई। इसके पश्चात आचार्य विद्यासागर महाराज की सामूहिक पूजा संपन्न हुई। मुनि श्री का पद प्रक्षालन करने का सौभाग्य श्रेष्ठी मनोज कुमार-जितेंद्र कुमार परिवार तथा रमेशचंद-नीरज कुमार भरसूली वाले परिवार को प्राप्त हुआ। जिनवाणी भेंट करने का सौभाग्य गंजबासौदा से पधारे गुरु भक्त परिवार एवं राघौगढ़ निवासी जिनेश कुमार-मुकेश कुमार जैन (जनता परिवार) को मिला। इस अवसर पर महाराजपुर (जिला सागर), गंजबासौदा, सुसनेर, नलखेड़ा, कुंभराज, साडा कॉलोनी तथा डोंगर सहित विभिन्न स्थानों से श्रद्धालु उपस्थित हुए। सभी श्रद्धालुओं ने मुनि श्री के चरणों में श्रीफल अर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया। राघौगढ़ जैन समाज द्वारा बाहर से आए अतिथियों का पगड़ी, अंगवस्त्र एवं माल्यार्पण कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन विकास कुमार जैन ने किया। उन्होंने बताया कि 30 जुलाई को मुनि संघ के सान्निध्य में राघौगढ़ नगर में प्रातः 8:30 बजे वीर शासन जयंती का आयोजन किया जाएगा।

गुरु पूर्णिमा महोत्सव श्रद्धा एवं उल्लास के साथ मनाया

टोंक. शाबाश इंडिया। श्री आदिनाथ दिगंबर जैन नसिया, अमीरगंज टोंक में बुधवार प्रातःकाल गुरु पूर्णिमा महोत्सव श्रद्धा, भक्ति एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान आदिनाथ के अभिषेक एवं शांतिधारा से हुआ। इसके पश्चात वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज के के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन कर गुरु महिमा का गुणगान किया गया तथा श्रद्धालुओं ने आचार्य श्री के पावन चरणों में बारंबार नमोस्तु अर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर गुरु पूर्णिमा के

महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गुरु ही जीवन को सही दिशा प्रदान करते हैं। गुरु के ज्ञान, संयम और तप से प्रेरणा लेकर मनुष्य अपने जीवन को सफल एवं सार्थक बना सकता है। भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोच्च माना गया है और गुरु पूर्णिमा का पर्व गुरु के प्रति श्रद्धा, कृतज्ञता एवं समर्पण व्यक्त करने का पावन अवसर है। कार्यक्रम में ओम ककोड़, आयुष फूलेता, मुकेश बरवास, पवन कंटान, आदिश गंगवाल, सुनील आंडरा, कुणाल ऊँम, अंकुर पाटनी, सक्षम पासरोटिया, अंकित बिलासपुरिया, अभिषेक बनेठा सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन गुरु वंदना के साथ हुआ।

राजनीति

लंबी उम्र, लेकिन जीवन स्वस्थ क्यों नहीं?

चिकित्सा विज्ञान ने मनुष्य की औसत आयु बढ़ाने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। भारत सहित दुनिया के अधिकांश देशों में लोग पहले की तुलना में अधिक समय तक जीवित रह रहे हैं। लेकिन इसके साथ एक गंभीर प्रश्न भी सामने आया है–यदि कोई व्यक्ति 80 वर्ष तक जीवित रहे, किंतु उसके अंतिम 10झ15 वर्ष अस्पतालों, दवाइयों और दूसरों पर निर्भरता में बीतें, तो क्या इसे वास्तविक प्रगति कहा जा सकता है? यह प्रश्न आज केवल चिकित्सा विज्ञान का नहीं, बल्कि समाज, सरकार और प्रत्येक व्यक्ति के लिए चिंतन का विषय है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) और विभिन्न वैश्विक स्वास्थ्य अध्ययनों के अनुसार, जीवन-प्रत्याशा बढ़ने के बावजूद स्वस्थ जीवन-प्रत्याशा उतनी तेजी से नहीं बढ़ी है। अर्थात लोग अधिक वर्ष तो जी रहे हैं, लेकिन उनमें से कई वर्ष गंभीर बीमारियों, शारीरिक अक्षमता और मानसिक तनाव के साथ बीतते हैं। यह स्थिति बताती है कि केवल आयु बढ़ाना पर्याप्त नहीं, बल्कि स्वस्थ और सक्रिय जीवन सुनिश्चित करना भी उतना ही आवश्यक है।इसका सबसे बड़ा कारण आधुनिक जीवनशैली है। तकनीक और सुविधाओं ने जीवन को आसान बनाया है, लेकिन शारीरिक सक्रियता कम कर दी है। घंटों बैठकर काम करना, मोबाइल और कंप्यूटर पर अत्यधिक निर्भरता, जंक फूड, अधिक चीनी और नमक का सेवन, अपर्याप्त नींद तथा लगातार मानसिक तनाव ने शरीर की प्राकृतिक प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर किया है। परिणामस्वरूप मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, कैंसर, फैटी लिवर, किडनी रोग, गठिया और अल्जाइमर जैसी गैर-संचारी बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं। भारत भी इस चुनौती से अछूता नहीं है। पहले संक्रामक रोग मृत्यु के प्रमुख कारण थे, लेकिन अब गैर-संचारी रोग सबसे बड़ी स्वास्थ्य समस्या बन चुके हैं। चिंता की बात यह है कि ये बीमारियां अब केवल वृद्धों तक सीमित नहीं रहीं। 35 से 50 वर्ष की आयु के लोग भी तेजी से इनकी चपेट में आ रहे हैं। इसका सीधा प्रभाव व्यक्ति की कार्यक्षमता, परिवार की आर्थिक स्थिति और देश की उत्पादकता पर पड़ता है। चिकित्सा विज्ञान की प्रगति भी इस परिदृश्य का एक पक्ष है। पहले जिन बीमारियों से लोगों की मृत्यु हो जाती थी, आज आधुनिक उपचार उन्हें लंबे समय तक जीवित रखता है।

संपादकीय

पीओके में बढ़ता जनाक्रोश

पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) इन दिनों गंभीर राजनीतिक और सामाजिक उथल-पुथल के दौर से गुजर रहा है। जून 2026 से शुरू हुआ जन आंदोलन अब केवल महंगाई, बिजली दरों और आवश्यक वस्तुओं की कमी तक सीमित नहीं रहा, बल्कि पाकिस्तान की प्रशासनिक व्यवस्था और सैन्य भूमिका के खिलाफ व्यापक असंतोष का प्रतीक बन गया है। रावलकोट, मुजफ्फराबाद, मीरपुर और कोटली सहित कई क्षेत्रों में हजारों लोग प्रदर्शन कर रहे हैं।

प्रदर्शनकारियों के नारों और मांगों ने इस आंदोलन को स्थानीय आर्थिक मुद्दों से आगे बढ़ाकर राजनीतिक अधिकारों और जवाबदेही के प्रश्न से जोड़ दिया है। जॉइंट अवामी एक्शन कमेटी (जेएएसी) के नेतृत्व में शुरू हुए इस आंदोलन की प्रमुख मांगों में बिजली दरों में राहत, महंगाई पर नियंत्रण, गेहूं और अन्य आवश्यक वस्तुओं की पर्याप्त उपलब्धता तथा राजनीतिक प्रतिनिधित्व से जुड़े मुद्दे शामिल हैं। आंदोलनकारियों ने पीओके विधानसभा में भारत से आए शरणार्थियों के लिए आरक्षित 12 सीटों को समाप्त करने की मांग भी उठाई है। जुलाई 2026 के चुनावों से पहले प्रस्तावित मुजफ्फराबाद मार्च ने इस आंदोलन को और अधिक चर्चा में ला दिया। सरकार की प्रतिक्रिया काफी सख्त रही। विभिन्न रिपोर्टों के अनुसार कई नेताओं को हिरासत में लिया गया, कुछ को भूमिगत होना पड़ा और इंटरनेट सेवाओं पर भी प्रतिबंध लगाए गए। कई स्थानों पर सुरक्षा बलों और प्रदर्शनकारियों के बीच झड़पें हुईं। अलग-अलग मीडिया और मानवाधिकार संगठनों की रिपोर्टों में हताहतों और गिरफ्तारियों के अलग-अलग आंकड़े सामने आए हैं, जिससे स्थिति की गंभीरता का अनुमान लगाया जा सकता है।इस आंदोलन की एक महत्वपूर्ण विशेषता महिलाओं और युवाओं की सक्रिय भागीदारी रही है। रावलकोट सहित कई इलाकों में लंबे समय तक धरने और विरोध प्रदर्शन जारी रहे। आंदोलनकारी राजनीतिक अधिकार, आर्थिक राहत, पारदर्शी प्रशासन और सुरक्षा बलों की भूमिका की समीक्षा जैसी मांगें उठा रहे हैं। उनका कहना है कि लंबे समय से बुनियादी सुविधाओं, आर्थिक अवसरों और लोकतांत्रिक भागीदारी की अनदेखी की गई है। पाकिस्तान इन घटनाओं के लिए बाहरी हस्तक्षेप और भारत की भूमिका का आरोप लगाता रहा है, जबकि आंदोलन से जुड़े लोग इसे स्थानीय जनता के असंतोष का परिणाम बताते हैं। विश्लेषकों का मानना है कि यदि लंबे समय से लंबित आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं का समाधान समय पर नहीं किया गया, तो असंतोष और गहरा सकता है। अक्टूबर 2025 में हुए कुछ समझौतों के पूर्ण क्रियान्वयन न होने की चर्चा भी आंदोलन को गति देने वाले कारणों में की जाती है। इस घटनाक्रम ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी ध्यान आकर्षित किया है। प्रवासी समुदाय ने विभिन्न देशों में प्रदर्शन किए हैं, जबकि मानवाधिकार संगठनों ने स्थिति पर चिंता व्यक्त की है। भारत ने भी पीओके में कथित दमन को लेकर अपनी प्रतिक्रिया दर्ज कराई है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

समर्पण और समानता का अमर आदर्श

सुरेश सिंह बैस 'शाश्वत'

मानव जीवन में मित्रता सबसे पवित्र और अनमोल संबंधों में से एक है। यह रक्त संबंधों से परे विश्वास, स्नेह, त्याग, सहयोग और आत्मीयता का ऐसा बंधन है, जो जीवन के हर सुख-दुःख में संबल प्रदान करता है। इसी अमूल्य संबंध के महत्व को रेखांकित करने के लिए प्रतिवर्ष 30 जुलाई को अंतर्राष्ट्रीय मित्रता दिवस मनाया जाता है। यह अवसर हमें सच्चे मित्रों के प्रति सम्मान, विश्वास और कृतज्ञता व्यक्त करने की प्रेरणा देता है। भारतीय संस्कृति और पौराणिक परंपरा में मित्रता के अनेक उदाहरण मिलते हैं, किंतु भगवान श्रीकृष्ण और सुदामा की मित्रता सर्वोच्च आदर्श मानी जाती है। यह केवल दो मित्रों की कथा नहीं, बल्कि निःस्वार्थ प्रेम, समानता, विनम्रता, करुणा और समर्पण का ऐसा अमर संदेश है, जो आज भी मानवता का मार्गदर्शन करता है। द्वापर युग में श्रीकृष्ण और सुदामा ने महर्षि सांदीपनि के आश्रम में साथ-साथ शिक्षा प्राप्त की। गुरुकुल में दोनों ने समान भाव से अध्ययन, सेवा और अनुशासन का पालन किया। यद्यपि श्रीकृष्ण स्वयं भगवान विष्णु के अवतार थे, फिर भी उन्होंने कभी अपने मित्र के साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया। एक प्रसिद्ध कथा के अनुसार, गुरुमाता के आदेश पर दोनों वन से लकड़ियां लाने गए। अचानक तेज वर्षा और तूफान आ गया। दोनों पूरी रात जंगल में भीगते रहे, लेकिन एक-दूसरे का साथ नहीं छोड़ा। उनकी निष्ठा और सेवा भावना से प्रसन्न होकर गुरु सांदीपनि ने उन्हें आशीर्वाद दिया। समय के साथ श्रीकृष्ण द्वारका के राजा बने, जबकि सुदामा अत्यंत निर्धन ब्राह्मण के रूप में जीवन यापन करने लगे। आर्थिक अभाव के बावजूद उन्होंने कभी अपनी आत्मिक समृद्धि और आत्मसम्मान को कम नहीं होने दिया। वे सदैव अपने बालसखा श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम और श्रद्धा से भरे रहे। एक दिन उनकी पत्नी सुशीला के आग्रह पर सुदामा श्रीकृष्ण से मिलने द्वारका जाने के लिए तैयार हुए। वे किसी सहायता की अपेक्षा नहीं रखते थे, इसलिए भेंट स्वरूप पड़ोसियों से प्राप्त थोड़ा-सा चिवड़ा (पोहा) एक कपड़े में बांधकर साथ ले गए। द्वारका पहुंचने पर साधारण वेशभूषा में खड़े सुदामा को देखकर महल के द्वारपालों को विश्वास नहीं हुआ कि वे द्वारकाधीश के मित्र हैं। जैसे ही श्रीकृष्ण को उनके आगमन का समाचार मिला, वे सिंहासन छोड़कर नंगे पांव दौड़ते हुए द्वार तक पहुंचे और अपने बालसखा को गले लगा लिया। उन्होंने स्वयं सुदामा के चरण धोए, उन्हें राजसी सम्मान दिया और प्रेमपूर्वक अपने समीप बैठाया। यह दृश्य बताता है कि सच्ची मित्रता में न धन का भेद होता है, न पद का और न ही प्रतिष्ठा का। सुदामा संकोचवश अपने साथ लाए चिवड़े की पोटली छिपाने लगे, किंतु श्रीकृष्ण ने उसे प्रेमपूर्वक लेकर बड़े आनंद से ग्रहण किया। उनके लिए वह साधारण भेंट नहीं, बल्कि मित्र के निष्कलुष प्रेम का प्रतीक थी। सुदामा बिना कुछ मांगे लौट आए, परंतु जब वे अपने गांव पहुंचे तो उनकी झोपड़ी के स्थान पर भव्य भवन था और परिवार समृद्धि से परिपूर्ण। श्रीकृष्ण ने बिना कहे ही अपने मित्र के सभी कष्ट दूर कर दिए। यही सच्ची मित्रता की पहचान है, जहां शब्दों से पहले भावनाओं को समझा जाता है। कृष्ण और सुदामा की कथा केवल सहायता का प्रसंग नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन है। यह हमें सिखाती है कि सच्चा मित्र वही है जो विपत्ति में साथ खड़ा रहे, सफलता में प्रसन्न हो, आत्मसम्मान का सम्मान करे और बिना स्वार्थ के संबंध निभाए। आज के प्रतिस्पर्धी और तनावपूर्ण जीवन में यह संदेश पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है।

फागी जैन समाज ने हर्षोल्लास से मनाया गुरु पूर्णिमा महोत्सव

चातुर्मास का 52वां मंगल कलश हुआ स्थापित

आर्यिका श्रुतमति माताजी बोलीं— गुरु केवल वंदना के नहीं, समर्पण और उनके बताए मार्ग पर चलने के पात्र हैं

फागी. शाबाश इंडिया

कस्बे के पार्श्वनाथ चैत्यालय में विराजमान तृतीय पट्टाधीश जैनाचार्य धर्मसागर जी महाराज से दीक्षित 80 वर्षीय वयोवृद्ध आर्यिका श्रुतमति माताजी एवं आर्यिका सुबोधमति माताजी ससंघ के सान्निध्य में पावन चातुर्मास-2026 का 52वां मंगल कलश जयघोष के साथ हर्षोल्लासपूर्वक स्थापित किया गया। साथ ही सकल दिगंबर जैन समाज, फागी द्वारा गुरु पूर्णिमा महोत्सव श्रद्धा एवं भक्ति के साथ मनाया गया। प्रातःकाल पार्श्वनाथ चैत्यालय में भगवान पार्श्वनाथ का अभिषेक, शांतिधारा एवं अष्टद्रव्य पूजन कर विश्व शांति तथा सुख-समृद्धि की मंगलकामना की गई। राजस्थान जैन महासभा शाखा फागी के महामंत्री राजाबाबू गोधा ने बताया कि कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर गुरु वंदना एवं धार्मिक अनुष्ठानों में सहभागिता निभाई।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए आर्यिका श्रुतमति माताजी ने कहा कि गुरु केवल वंदना के पात्र नहीं हैं, बल्कि उनके प्रति पूर्ण समर्पण और उनके बताए मार्ग पर चलना ही सच्ची गुरु पूजा है। गुरु ही अज्ञानरूपी अंधकार को दूर कर आत्मकल्याण और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करते हैं। उन्होंने कहा कि जीवन में ऐसे गुरु का चयन करना चाहिए जो विषय-कषायों से मुक्त हों और जिनका जीवन स्वयं आदर्श हो। फागी पंचायत समिति के पूर्व प्रधान सुकुमार झंडा ने कहा कि जैन धर्म में गुरु पूर्णिमा आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा के दिन भगवान महावीर द्वारा प्रथम गणधर इन्द्रभूति गौतम को शिष्य बनाने तथा जैन संघ की स्थापना के स्मरण में मनाई जाती है। इस दिन श्रद्धालु आचार्य, उपाध्याय एवं साधु-संतों की वंदना कर पूजा-अर्चना, स्वाध्याय और संयम का पालन करते हैं। चातुर्मास समिति के सुरेंद्र बावड़ी एवं विनोद कुमार कलवाड़ा ने बताया कि कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर पार्श्वनाथ चैत्यालय में रामस्वरूप, नोरतमल, कमलेश कुमार एवं सुरेश कुमार जैन (मंडावरा परिवार) द्वारा ध्वजारोहण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। धर्मगुणामृत ट्रस्ट, चकवाड़ा के मुख्य संयोजक अशोक जैन अनोपड़ा, अध्यक्ष विमल कुमार बड़जात्या तथा मदनगंज-किशनगढ़ सहित विभिन्न स्थानों से आए ट्रस्टियों एवं श्रद्धालुओं ने भगवान पार्श्वनाथ का अर्घ्य अर्पित कर आर्यिका संघ से मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। जयपुर, निवाई, चौरू, चकवाड़ा, मौजमाबाद तथा फागी सहित विभिन्न स्थानों से आए श्रद्धालुओं ने सामूहिक रूप से समाधिस्थ सिद्ध मुनि गुणसागर जी महाराज, समाधिस्थ आर्यिका आदिमति माताजी, आर्यिका ज्ञानमति माताजी, आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज, आर्यिका श्रुतमति माताजी एवं आर्यिका सुबोधमति माताजी सहित विभिन्न आचार्यों एवं पूर्वाचार्यों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित कर अर्घ्य समर्पित किए।

कार्यक्रम में समाजश्रेष्ठी रामस्वरूप, शिखरचंद, राजेंद्र कुमार, सिद्ध कुमार, पवन कुमार एवं जितेंद्र कुमार मोदी परिवार (फागी) ने बोली के माध्यम से प्रथम मुख्य कलश स्थापित करने का सौभाग्य प्राप्त किया। वहीं महावीर प्रसाद एवं दोलतमल जैन (गोल्ड पैलेस) परिवार को पाद प्रक्षालन तथा नेमीचंद, रमेशचंद्र, पवन कुमार, अशोक कुमार, विनोद कुमार कागला परिवार को वस्त्र भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में बाड़ा पदमपुरा समिति के अध्यक्ष सुधीर जैन, प्रसिद्ध वास्तुविद् राजकुमार कोठारी, धर्मगुणामृत ट्रस्ट के पदाधिकारी, एडवोकेट विनोद जैन, फागी बार एसोसिएशन के अध्यक्ष एडवोकेट पंकज जैन, विमल जोला, राकेश संघी, अजित काला, समाजसेवी सुनील पंसारी सहित विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों के पदाधिकारी तथा बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन प्रतिष्ठाचार्य मनीष गोधा एवं पारस मोदी ने किया।

राजाबाबू गोधा
मीडिया प्रवक्ता, राजस्थान जैन महासभा

आसना स्कूल में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया गुरु पूर्णिमा का पर्व

आसना. शाबाश इंडिया। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, आसना में गुरु पूर्णिमा का पर्व श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य डॉ. महावीर प्रसाद जैन ने की। इस अवसर पर प्रधानाचार्य डॉ. जैन ने गुरु पूर्णिमा के धार्मिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक महत्व पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियों को गुरु के प्रति सम्मान एवं आदर का संदेश दिया। वहीं हीरालाल जाट ने भी गुरु-शिष्य परंपरा के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए। राज्य सरकार के निर्देशानुसार 'मिशन पढ़ो राजस्थान-2026' के अंतर्गत 'रीड-ए-थॉन' गतिविधि का भी आयोजन किया गया, जिसका संचालन श्रीमती पुष्पा सोलंकी ने किया। इस गतिविधि में विद्यालय के छात्र-छात्राओं, शिक्षकों तथा अभिभावकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए प्रधानाचार्य डॉ. महावीर प्रसाद जैन एवं विद्यालय स्टाफ ने वृक्षारोपण किया। विद्यार्थियों ने भी पौधे लगाकर उनकी देखभाल का संकल्प लिया। कार्यक्रम का समापन गुरुजनों के प्रति सम्मान, पठन-पाठन को बढ़ावा देने तथा पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने के साथ हुआ।

विश्व शांति महायज्ञ एवं पूर्णाहुति के साथ आठ दिवसीय श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का भव्य समापन

बड़ागांव धसान। श्री उदार सागर जनकल्याण तीर्थ, फलहोड़ी (बड़ागांव धसान) के तत्वावधान में आयोजित आठ दिवसीय श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का समापन विश्व शांति महायज्ञ एवं पूर्णाहुति के साथ श्रद्धा और भक्तिभावपूर्वक संपन्न हुआ। मुकेश जैन लार ने बताया कि विधान के अंतिम दिन श्रद्धालुओं ने मंत्रोच्चार के मध्य यज्ञ कुंड में आहुतियां अर्पित कर विश्व शांति, मानव कल्याण एवं समस्त प्राणिमात्र के सुख-समृद्धि की मंगलकामना की। भगवान सिद्ध परमेष्ठी की आराधना करते हुए श्रद्धालुओं ने सामूहिक रूप से 1024 महाअर्घ्य समर्पित किए। विधान के दौरान प्रतिदिन नित्य नियम के अनुसार मूलनायक भगवान का अभिषेक, पावन कलशाभिषेक एवं शांतिधारा संपन्न हुई। विश्व में सुख, शांति एवं समृद्धि की कामना से विशेष शांतिधारा भी की गई। समापन अवसर पर गाजे-बाजे के साथ भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें बड़ी संख्या में महिला श्रद्धालुओं ने जैन ध्वज लहराते हुए उत्साहपूर्वक सहभागिता की। महायज्ञ का आयोजन प्रतिष्ठाचार्य पं. ऋषभ जैन एवं पं. अजित जैन के कुशल निर्देशन में संपन्न हुआ। शुद्ध मंत्रोच्चार के बीच यज्ञनायक एवं इंद्र-इंद्राणियों ने विधि-विधान से हवन कुंड में आहुतियां अर्पित कीं। इस अवसर पर प्रतिष्ठाचार्य पं. ऋषभ जैन ने कहा कि श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान आत्मशुद्धि, संयम एवं आध्यात्मिक उन्नति का सर्वोत्तम साधन है। भगवान सिद्ध की आराधना से सांसारिक दुखों एवं दरिद्रता का नाश होता है तथा मन, वचन और काया की शुद्धि के साथ किया गया त्याग ही जीवन को सार्थक बनाता है। कार्यक्रम में बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी ने इंद्र-इंद्राणी बनकर भक्तिभाव से नृत्य प्रस्तुत किया। पूरा मंदिर परिसर एवं पंडाल प्रभु के जयघोष से गुंजायमान रहा। महायज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात सभी श्रद्धालुओं के लिए वात्सल्य भोज (सात्विक महाप्रसाद) का आयोजन भी किया गया। इस अवसर पर डॉ. कैलाश नूना, महामंत्री मुन्ना शाह, विजय जैन (कुसमाड़ वाले, जयपुर), हुकुमचंद हटैया, प्रकाश सिंघई, सुखानंद सेठ, राकेश हटैया, प्रसन्न चौधरी सहित अनेक गणमान्य नागरिक एवं श्रद्धालु उपस्थित रहे।

मिशन मुस्कान के तहत 90 बच्चों तक पहुंची सेवा

दो आंगनवाड़ी एवं एक बालवाड़ी के नन्हे-मुन्ने बच्चों को गणवेश भेंट

अजमेर. शाबाश इंडिया। लायंस क्लब्स इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट 3233 ई-2 के प्रांतपाल लायन निशांत जैन के प्रांतीय स्लोगन 'फ्लाइट ऑफ ड्रीम' के प्रमुख सेवा प्रकल्प 'मिशन मुस्कान' के अंतर्गत लायंस क्लब अजमेर आस्था ने जरूरतमंद बच्चों के जीवन में खुशियों के रंग भरते हुए 90 बच्चों को गणवेश भेंट किए। क्लब अध्यक्ष लायन कमल बाफना ने बताया कि समाजसेवी लायन राकेश पालीवाल, प्रांतीय सभापति (मिशन मुस्कान) लायन अतुल पाटनी, दिल्ली निवासी राजेश जैन एवं अन्य भामाशाहों के सहयोग से तोपदड़ा क्षेत्र के स्लम एरिया स्थित मालियों की धर्मशाला में संचालित बंजारा बस्ती आंगनवाड़ी के 35, गुलाब शाह का तकिया आंगनवाड़ी के 25 तथा बालवाड़ी के 30 बच्चों सहित कुल 90 बच्चों को गणवेश वितरित किए गए। क्लब सचिव लायन अनिल चोरड़िया ने बताया कि मिशन मुस्कान का उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों को शिक्षा के प्रति प्रेरित करना तथा उनमें आत्मविश्वास और समानता की भावना विकसित करना है। कार्यक्रम का संयोजन प्रांतीय सभापति (मिशन मुस्कान) लायन अतुल पाटनी ने किया। गणवेश प्राप्त करते ही बच्चों के चेहरे खुशी से खिल उठे। सिंधी बस्ती आंगनवाड़ी की कार्यकर्ता ममता मौर्य, सहायिका मीनाक्षी लहरी तथा बंजारा बस्ती आंगनवाड़ी की कार्यकर्ता जयश्री मिश्रा, सहायिका सुलोचना एवं अभिभावकों ने लायंस क्लब अजमेर आस्था तथा सभी सेवा सहयोगियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे सेवा कार्य जरूरतमंद बच्चों के लिए प्रेरणादायी हैं।

गुरु पूर्णिमा पर योग गुरु दिनेश खंडेलवाल का सम्मान

जयपुर. शाबाश इंडिया। गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर आनंद विहार, जगतपुरा में गत एक माह से संचालित निःशुल्क योग शिविर के अंतर्गत आनंद विहार योग परिवार की ओर से योग गुरु दिनेश खंडेलवाल का सम्मान किया गया। इस अवसर पर योग साधकों ने गुरु के प्रति श्रद्धा एवं कृतज्ञता व्यक्त करते हुए दिनेश खंडेलवाल द्वारा निरंतर दी जा रही निःस्वार्थ योग सेवा की सराहना की तथा उनके प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में योग के माध्यम से स्वस्थ जीवनशैली अपनाने और नियमित योगाभ्यास के महत्व पर भी विस्तार से चर्चा की गई। कार्यक्रम की संयोजिका सुजाता शरण ने कहा कि योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि शरीर, मन और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करने वाली जीवनशैली है। नियमित योगाभ्यास व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ और अनुशासित बनाता है। कार्यक्रम के अंत में सभी योग साधकों ने नियमित योगाभ्यास करने तथा योग को अपनी दैनिक जीवनशैली का अभिन्न अंग बनाकर स्वस्थ एवं संतुलित जीवन जीने का संकल्प लिया।

गुरु पूर्णिमा पर उमड़ा श्रद्धा का सागर, गणिनी आर्यिका विभा श्री माताजी ससंघ के सानिध्य में भव्य महोत्सव सम्पन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर श्री दिगंबर जैन मंदिर, वरुण पथ, मानसरोवर में गणिनी आर्यिका विभा श्री माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में गुरु पूर्णिमा महोत्सव श्रद्धा, भक्ति एवं उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। महोत्सव में जयपुर सहित विभिन्न स्थानों से बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। पूरे मंदिर परिसर में गुरु भक्ति, मंगलध्वनि एवं जयघोषों का वातावरण बना रहा। प्रचार संयोजक जिनेश कुमार जैन ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ प्रो. आई.पी. जैन एवं श्रीमती मृदुला जैन द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इसके पश्चात स्थानीय महिला मंडल की सदस्य मोनिका जैन एवं अंतिमा जैन ने भावपूर्ण नृत्य के माध्यम से मंगलाचरण प्रस्तुत कर श्रद्धालुओं को भक्तिरस से सराबोर कर दिया। अध्यक्ष जे.के. जैन एवं मंत्री ज्ञान बिलाला ने बताया कि परम पूज्य समाधि सम्राट राष्ट्रसंत गणाचार्य 108 विराग सागर जी महाराज के अनन्य भक्त मुकेश जैन एवं उनके परिवार (निर्माण नगर) तथा अमित लुहाड़िया एवं आशीष लुहाड़िया परिवार द्वारा श्रद्धापूर्वक गुरु पूजन कराया गया। वहीं गणिनी आर्यिका विभा श्री माताजी का पाद प्रक्षालन स्थानीय महिला मंडल तथा मनीष जैन एवं श्रीमती पायल जैन शाह परिवार (धनबाद) द्वारा भक्तिभाव एवं विधि-विधान के साथ संपन्न हुआ। उपाध्यक्ष लोकेश सोगानी एवं कोषाध्यक्ष हेमेंद्र सेठी ने बताया कि श्रीमती विमला देवी, अरुण जैन, सुनील जैन परिवार सहित कुल 32 परिवारों ने आर्यिका संघ को श्रद्धाभाव से वस्त्र भेंट कर पुण्य लाभ अर्जित किया। संगठन मंत्री सुनील गंगवाल एवं उप संगठन मंत्री राजेंद्र सोनी ने बताया कि मनीष जैन एवं श्रीमती पायल जैन शाह परिवार (धनबाद) द्वारा शास्त्र भेंट कर गुरु परंपरा एवं धर्म के प्रति अपनी अटूट आस्था व्यक्त की गई। इस अवसर पर समाज समिति के वरिष्ठ सदस्य महावीर बाकलीवाल, भागचंद जैन, अरविंद गंगवाल, राकेश चादवाड़, सुनील गोधा, अनिल जैन (सोड़ा वाले), नवीन बाकलीवाल, अभिषेक जैन (बिट्टू), दिनेश जैन, पदमचंद जैन, अजीत जैन, सुधीर जैन बोहरा, राकेश छाबड़ा, अशोक जैन एवं ताराचंद वेद सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। बड़ी संख्या में महिला-पुरुषों, युवाओं एवं बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर गुरु भक्ति एवं सेवा का संदेश दिया। गुरु पूर्णिमा महोत्सव श्रद्धा, समर्पण, सेवा एवं गुरु महिमा का अनुपम संगम बनकर श्रद्धालुओं के लिए अविस्मरणीय बन गया। सभी श्रद्धालुओं ने गणिनी आर्यिका विभा श्री माताजी ससंघ के मंगल आशीर्वाद प्राप्त कर अपने जीवन को धन्य माना।

2 अगस्त को होगा भव्य चातुर्मास कलश स्थापना महोत्सव

प्रचार संयोजक जिनेश कुमार जैन ने बताया कि गणिनी आर्यिका विभा श्री माताजी ससंघ का मंगल प्रवेश 26 जुलाई को श्री दिगंबर जैन मंदिर, वरुण पथ, मानसरोवर में संपन्न हुआ था। इसके उपरांत 2 अगस्त 2026 (रविवार) को मंदिर परिसर में भव्य चातुर्मास कलश स्थापना महोत्सव आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर प्रदेशभर से बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के शामिल होने की संभावना है। आयोजन समिति ने सभी धमार्नुरागी बंधुओं से सपरिवार उपस्थित होकर धर्मलाभ अर्जित करने एवं माताजी के मंगल आशीर्वाद प्राप्त करने का आग्रह किया है।

गुरु पूर्णिमा पर प्रमाणित योगाचार्य मनीष जैन का सम्मान, वरिष्ठ योग साधकों ने दिया आशीर्वाद

कोटा. शाबाश इंडिया

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर आयोजित नियमित निःशुल्क योग सत्र के उपरांत वरिष्ठ योग साधकों ने योग सर्टिफिकेशन बोर्ड, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार से प्रमाणित योगाचार्य इंजीनियर मनीष जैन का पुष्पमाला एवं सम्मान-पत्र भेंट कर अभिनंदन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ गुरु पूर्णिमा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए हुआ। वक्ताओं ने कहा कि गुरु केवल ज्ञान के स्रोत ही नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा, संस्कार, अनुशासन एवं श्रेष्ठ जीवन मूल्यों से जोड़ने वाले मार्गदर्शक होते हैं। स्वस्थ शरीर, स्वस्थ विचार और संस्कारित समाज का निर्माण गुरु के मार्गदर्शन से ही संभव है। योग भी हमारी गुरु-शिष्य परंपरा की अमूल्य धरोहर है, जो आज करोड़ों लोगों को स्वस्थ, संतुलित एवं सकारात्मक जीवन की दिशा प्रदान कर रहा है। योगाचार्य मनीष जैन ने बताया कि प्रतिदिन आयोजित होने वाले इस निःशुल्क योग सत्र में प्रार्थना, आसन, प्राणायाम एवं ध्यान का नियमित अभ्यास कराया जाता है। वे वर्षों से निःस्वार्थ भाव से जनस्वास्थ्य जागरूकता एवं निःशुल्क योग प्रशिक्षण के माध्यम से लोगों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। इस अवसर पर मुकेश सक्सेना एवं ओ.पी. गुप्ता ने गुरु पूर्णिमा के महत्व पर अपने विचार व्यक्त करते हुए गुरु परंपरा के प्रति श्रद्धा प्रकट की तथा योगाचार्य मनीष जैन द्वारा योग एवं स्वास्थ्य जागरूकता के क्षेत्र में किए जा रहे उल्लेखनीय कार्यों की सराहना की। श्याम शर्मा ने कहा कि योगाचार्य मनीष जैन के नियमित मार्गदर्शन से समाज के विभिन्न वर्गों को स्वास्थ्य लाभ मिल रहा है तथा अनेक लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया है। वहीं बृजेश गर्ग ने निःस्वार्थ भाव से संचालित जनस्वास्थ्य अभियान एवं निःशुल्क योग सेवा की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे प्रयास समाज को स्वस्थ, जागरूक और अनुशासित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। कार्यक्रम में बताया गया कि योग समूह में अनेक वरिष्ठ साधकों की आयु 70 से 85 वर्ष के बीच है। इनमें से कई साधक बायपास सर्जरी करा चुके हैं तथा कुछ पूर्व में हृदय संबंधी समस्याओं से भी पीड़ित रहे हैं। नियमित योगाभ्यास, अनुशासित जीवनशैली एवं सकारात्मक सोच के कारण वे आज स्वस्थ, ऊर्जावान एवं सक्रिय जीवन जी रहे हैं। प्रेरणादायक तथ्य यह भी है कि इनमें से कई वरिष्ठ साधक समय-समय पर 24 सूर्य नमस्कार का अभ्यास सहजता से कर लेते हैं, जो योग की शक्ति और नियमित साधना का सशक्त उदाहरण है। इस अवसर पर योग फ्रॉम हार्ट की निदेशक मोनिका जैन भी उपस्थित रहीं। कार्यक्रम में अनुराग सक्सेना, बृजेश गर्ग, श्याम शर्मा, श्याम द्विवेदी, जिनेंद्र ठाकुर, खेमराज अग्रवाल, कुमुद गुप्ता, एन.के. गुप्ता, शिव कुमार गुप्ता, प्रेम प्रकाश मदान सहित अनेक योग साधकों ने सहभागिता की। अंत में मुकेश सक्सेना एवं ओ.पी. गुप्ता ने सभी वरिष्ठजनों, योग साधकों एवं अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए गुरु पूर्णिमा की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने सभी से नियमित योगाभ्यास को अपनी दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाकर स्वस्थ, संतुलित एवं सकारात्मक जीवन जीने का आह्वान किया।

गुरु पूर्णिमा पर जनकपुरी में 28 परिवारों ने 28 रजत कलशों से आचार्य श्री का पाद प्रक्षालन किया

जयपुर. शाबाश इंडिया

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर जनकपुरी स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर में आध्यात्म योगी आचार्य श्री 108 आदित्य सागर जी महाराज ससंघ के 28वें चातुर्मास के अवसर पर श्रद्धा, भक्ति एवं गुरु वंदना का अनुपम संगम देखने को मिला। गुरु पूर्णिमा महोत्सव का शुभारंभ शकुंतला बिंदायक्या एवं उनकी टीम द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से हुआ। इसके उपरांत 28 परिवारों ने 28 रजत कलशों में 28 प्रकार के पवित्र द्रव्यों (रसों) से आचार्य श्री का विधि-विधानपूर्वक पाद प्रक्षालन किया। श्राविका स्नेहलता-विकास काला (बापूनगर) परिवार को दीप प्रज्वलन एवं पाद प्रक्षालन का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जबकि सुनील पंसारी द्वारा शास्त्र भेंट किए गए। पूरे मंदिर परिसर में जयघोष, भक्ति गीतों एवं मंगलध्वनियों से वातावरण भक्तिमय बना रहा। श्रद्धालुओं ने गुरु पूजन, गुरु वंदना एवं मंगल आशीर्वाद प्राप्त कर स्वयं को धन्य महसूस किया। अपने मंगल प्रवचनों में आचार्य श्री ने कहा कि गुरु का सान्निध्य आत्मकल्याण का सर्वोत्तम माध्यम है। गुरु के बताए संयम, सदाचार एवं धर्म के मार्ग पर चलकर ही जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं को धर्म, सेवा, स्वाध्याय एवं आत्मचिंतन के प्रति सदैव जागरूक रहने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने गुरु चरणों में विनयपूर्वक वंदन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। पूरे आयोजन में गुरु-भक्ति, श्रद्धा एवं आध्यात्मिक वातावरण की अनुपम छटा देखने को मिली।

रोटरी क्लब बनारस का 82वां पदस्थापन समारोह संपन्न

राजीव कुमार ने संभाली अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी

वाराणसी। (संतोष कुमार सिंह)

समाज सेवा के क्षेत्र में 82 वर्षों से सक्रिय रोटरी क्लब बनारस का 82वां पदस्थापन समारोह कैंटोनमेंट स्थित होटल रेडिसन में उत्साहपूर्ण वातावरण में आयोजित किया गया। समारोह में सत्र 2026-27 के लिए रोटेरियन राजीव कुमार ने अध्यक्ष पद की शपथ लेकर कार्यभार ग्रहण किया।

उनके साथ क्लब की नई कार्यकारिणी ने भी पद एवं गोपनीयता की शपथ ली। कार्यक्रम का शुभारंभ गणेश वंदना एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश सरकार के आयुष राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. दयाशंकर मिश्रा 'दयालु' ने रोटरी क्लब के सेवा कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि सेवा ही सबसे बड़ी पूजा है। रोटरी जैसे संगठन समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। विशिष्ट अतिथि सेवानिवृत्त न्यायाधीश बी.डी. मिश्रा ने भी क्लब की सामाजिक गतिविधियों की प्रशंसा करते हुए नई कार्यकारिणी को शुभकामनाएं दीं। नवनिर्वाचित अध्यक्ष रोटेरियन राजीव कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि आगामी सत्र में स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार, 'स्वच्छ काशीझसुंदर काशी' अभियान, पर्यावरण संरक्षण, प्लास्टिक मुक्त समाज, युवाओं, विद्यार्थियों एवं महिलाओं के सशक्तिकरण, सदस्यता वृद्धि तथा पारदर्शी एवं प्रभावी सेवा कार्यों को प्राथमिकता दी जाएगी। उन्होंने सभी सदस्यों से समाज परिवर्तन का सक्रिय सहभागी बनने तथा परिवार की भावना के साथ मिलकर कार्य करने का आह्वान किया।

गुरु पूर्णिमा पर धावास जैन मंदिर पहुंचे प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा, विश्व शांति महायज्ञ में की सहभागिता

जयपुर. शाबाश इंडिया। राष्ट्रसंत चतुर्थ पट्टाधीश पूज्य आचार्य श्री 108 सुनील सागर जी महाराज की सुशिष्या आर्यिका सुविज्ञमति माताजी ससंघ के पावन सान्निध्य में धावास स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर में आयोजित श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं विश्व शांति महायज्ञ के दौरान गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर राजस्थान प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा ने सहभागिता की। धावास जैन मंदिर के संरक्षक एवं मंदिर निर्माण संयोजक जयकुमार जैन बड़जात्या ने बताया कि डोटासरा ने आर्यिका संघ के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया तथा विश्व शांति महायज्ञ में आहुति अर्पित कर समस्त विश्व में शांति, सद्भाव एवं मानव कल्याण की मंगलकामना की। इस अवसर पर उनके साथ राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य अशोक शर्मा, वरिष्ठ कांग्रेस नेता रामनिवास कटारिया, पृथ्वीराज नगर जनसंघर्ष समिति के अध्यक्ष अनिल माथुर, पार्षद प्रत्याशी मोहित जैन, रामनिवास शर्मा सहित सैकड़ों कांग्रेस कार्यकर्ता एवं जैन समाज के श्रद्धालु भी उपस्थित रहे।

आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज के सान्निध्य में सीकर में गुरु पूर्णिमा महोत्सव सम्पन्न

धर्मसागर समाधि स्थल पर 'आचार्य श्री धर्मसागर स्मारक' का हुआ शिलान्यास

सीकर. शाबाश इंडिया

स्थानीय सालासर रोड स्थित आचार्य धर्मसागर महाराज समाधि स्थल पर परम पूज्य वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में गुरु पूर्णिमा महोत्सव श्रद्धा, भक्ति एवं उल्लास के साथ मनाया गया। सीकर में 39 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद आचार्य श्री के मंगल प्रवेश से यह आयोजन ऐतिहासिक बन गया। देश के विभिन्न राज्यों से बड़ी संख्या में गुरुभक्त एवं श्रद्धालु महोत्सव में शामिल हुए। भगवान महावीर चैरिटी ट्रस्ट एवं प्रबंध समिति के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम के अंतर्गत प्रातः चातुर्मास स्थल से आचार्य धर्मसागर महाराज समाधि स्थल तक भव्य शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के साथ सैकड़ों श्रद्धालु धर्मध्वज एवं जयघोष के साथ शामिल हुए।

मंत्रोच्चार के बीच हुआ 'आचार्य श्री धर्मसागर स्मारक' का शिलान्यास

भगवान महावीर चैरिटी ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने बताया कि गुरु पूर्णिमा महोत्सव के मुख्य आकर्षण के रूप में 'आचार्य श्री धर्मसागर स्मारक' का भव्य शिलान्यास समारोह आयोजित किया गया। उल्लेखनीय है कि सीकर की यह पावन धरा आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज के दीक्षा गुरु धर्मशिरोमणि आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज की पावन स्मृतियों से जुड़ी हुई है। मुख्य शिलान्यासकर्ता मां कमला देवी, पदमचंद, महेंद्र कुमार एवं समस्त धाकड़ा परिवार (मूल निवासी सीकर, वर्तमान में चेन्नई एवं बेंगलुरु प्रवासी) रहे। वैदिक मंत्रोच्चार एवं धार्मिक विधि-विधान के बीच देशभर से आए श्रद्धालुओं की उपस्थिति में शिलान्यास सम्पन्न हुआ। प्रवक्ता विवेक पाटोदी ने बताया कि प्रातःकाल से ही धार्मिक अनुष्ठानों का क्रम प्रारंभ हो गया था। देशभर से आए श्रद्धालुओं ने आचार्य श्री ससंघ के चरणों में अर्घ्य समर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया तथा अष्टद्रव्य से विशेष पूजा-अर्चना की।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से हुआ, जिसका सौभाग्य धाकड़ा परिवार को प्राप्त हुआ। इसके पश्चात चित्र अनावरण एवं णमोकार मंत्र का सामूहिक जाप किया गया। वर्धमान स्कूल के विद्यार्थियों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। आचार्य श्री के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य विभिन्न क्षेत्रों से पधारे गुरुभक्तों को प्राप्त हुआ, जबकि शास्त्र भेंट भगवानदास, बाबूलाल एवं राजकुमार सेठी परिवार (सीकर-जयपुर) द्वारा की गई। संगीतमय आरती के साथ गुरु महिमा का गुणगान किया गया। महाआरती का सौभाग्य शिखरचंद, कमलकुमार, किशोरकुमार, अजयकुमार एवं

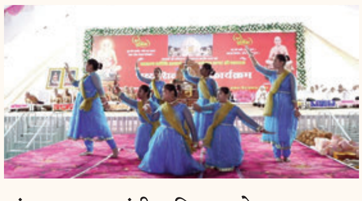

संजयकुमार सांघी परिवार को प्राप्त हुआ। आचार्य श्री के परम भक्त धर्मचंद सांघी ने विनयांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन दिल्ली से पधारी डॉ. इंदु जैन एवं संजय बड़जात्या ने किया। तारा देवी ने सीकर चातुर्मास आगमन पर भक्तिमय भजन प्रस्तुत किया।

पद्मावती पब्लिक स्कूल में
गुरु पूर्णिमा
श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाई गई

गुरुर्ब्रह्मा
गुरुर्विष्णुः
गुरुर्देवो
महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्
परब्रह्म तस्मै
श्री गुरवे नमः ॥

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री महावीर दिगंबर जैन शिक्षा परिषद के तत्वावधान में मानसरोवर स्थित पद्मावती पब्लिक स्कूल में गुरु पूर्णिमा का पर्व श्रद्धा, सम्मान एवं उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं वंदना के साथ हुआ। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने नृत्य, भाषण, गीत एवं कविता की मनमोहक प्रस्तुतियों के माध्यम से गुरुजनों के प्रति अपनी श्रद्धा, सम्मान एवं कृतज्ञता व्यक्त की। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती हेमलता जैन ने विद्यार्थियों को गुरु के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गुरु ही ज्ञान, संस्कार एवं जीवन मूल्यों का मार्गदर्शन करते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से गुरुजनों के बताए मार्ग पर चलकर अपने जीवन को सफल बनाने का आह्वान किया। विद्यालय के अध्यक्ष श्री उमरावमल सांघी एवं कोषाध्यक्ष श्री महेश कला ने भी विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए गुरुजनों के प्रति सम्मान, अनुशासन एवं कृतज्ञता की भावना बनाए रखने तथा उनके आदर्शों को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के समापन पर विद्यार्थियों ने गुरुजनों का तिलक कर एवं चरण स्पर्श कर सम्मान किया। पूरे आयोजन के दौरान गुरु-शिष्य परंपरा की गरिमा, भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों की सुंदर झलक देखने को मिली।

वाराणसी में हिंदू युवा वाहिनी का शपथ ग्रहण समारोह संपन्न

भास्कर तिवारी 'रानू' बने मंडल प्रभारी, समर बहादुर सिंह ने संभाली जिलाध्यक्ष की जिम्मेदारी

वाराणसी। (संतोष कुमार सिंह)

कमिश्नरी परिसर स्थित सर्किट हाउस में हिंदू युवा वाहिनी का शपथ ग्रहण समारोह गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में हिंदू युवा वाहिनी के राष्ट्रीय अध्यक्ष विक्रम सिंह राठौर ने संगठन के विभिन्न पदों पर मनोनीत पदाधिकारियों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। इस अवसर पर भास्कर तिवारी 'रानू' को वाराणसी मंडल प्रभारी, समर बहादुर सिंह को वाराणसी जिलाध्यक्ष, सूर्या अग्रहरि को प्रदेश उपाध्यक्ष तथा हर्षित विश्वकर्मा को प्रदेश सचिव नियुक्त किया गया। समारोह में हिंदू युवा वाहिनी की संरक्षक रीना सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहीं। उनके साथ संगठन के राष्ट्रीय, प्रदेश, मंडल एवं जिला स्तर के अनेक पदाधिकारी और कार्यकर्ता भी मौजूद रहे। सभी ने नवनियुक्त पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए संगठन को और अधिक सशक्त बनाने तथा समाज सेवा, राष्ट्रहित एवं सनातन संस्कृति के संरक्षण के लिए समर्पित भाव से कार्य करने का आान किया। नवनियुक्त पदाधिकारियों ने संगठन के प्रति पूर्ण निष्ठा के साथ कार्य करने, समाज एवं राष्ट्रहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देने तथा हिंदू युवा वाहिनी की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प व्यक्त किया। आयोजक मंडल की ओर से बताया गया कि समारोह में संगठन के राष्ट्रीय, प्रदेश, मंडल एवं जिला स्तर के अनेक पदाधिकारी उपस्थित रहे। प्रमुख रूप से राष्ट्रीय अध्यक्ष विक्रम सिंह राठौर, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. वीरेन्द्र सिंह तोमर, पश्चिम बंगाल की प्रदेश अध्यक्ष पूजा यादव तथा उत्तर प्रदेश के कार्यवाहक प्रदेश अध्यक्ष राकेश श्रीवास्तव समारोह में मौजूद रहे।

अपने घर को अयोध्या बनाएं, जहां सदैव संस्कारों का सिंचन हो: श्री श्री रोहित गोपाल भैया

बद्रीनाथ धाम में गुरु पूजन एवं सत्संग; देशभर से पहुंचे श्रद्धालु, भजनों और हवन से भक्तिमय हुआ वातावरण

चित्तौड़गढ़. शाबाश इंडिया। जिले के बद्रीनाथ धाम में आयोजित गुरु पूजन एवं सत्संग कार्यक्रम श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक चेतना का अनुपम संगम बन गया। राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, दिल्ली और हरियाणा सहित देश के विभिन्न राज्यों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं साधक गुरु पूजन में शामिल होने पहुंचे। भजनों, प्रवचनों और वैदिक अनुष्ठानों से पूरा धाम भक्तिमय वातावरण में सराबोर हो गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मेवाड़ धर्म प्रमुख पूज्य श्री श्री रोहित गोपाल भैया ने कहा, जीवन में सदैव सद्कर्म करो, क्योंकि हर कर्म का फल अवश्य मिलता है। उन्होंने कहा कि मनुष्य को अपने प्रत्येक कर्म के प्रति सजग रहना चाहिए। सच्चा गुरु वही है, जो अपने शिष्य को सांसारिक कर्तव्यों का निर्वहन कराते हुए अंततः वैराग्य का मार्ग दिखाए, ताकि वह सांसारिक मोह-माया से ऊपर उठकर ईश्वर में अपना चित्त लगा सके। गुरुदेव ने श्रद्धालुओं से अपने घर को अयोध्या के समान बनाने का आान करते हुए कहा कि जहां संस्कार, प्रेम और धर्म का वातावरण रहता है, वहीं सच्चे अर्थों में ईश्वर का वास होता है। उनके उद्बोधन के बाद नगरी हो अयोध्या सी भजन पर श्रद्धालु भक्ति भाव में झूम उठे। ऋषिकेश से पधारे प्रकांड पंडित आकाश जुयाल ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ हवन संपन्न कराया। मंत्रों की गूंज और यज्ञ की पावन आहुतियों से पूरा परिसर आध्यात्मिक ऊर्जा से ओत-प्रोत हो उठा। वहीं दुनिया से मैं हारा तो आया तेरे द्वार, यहां से भी जो हारा तो कहां जाऊंगा सरकार भजन ने श्रद्धालुओं को भाव-विभोर कर दिया। प्रवचन के दौरान गुरुदेव ने देवर्षि नारद एवं भगवान विष्णु की कथा का उल्लेख करते हुए गुरु निंदा से बचने तथा गुरु द्वारा दिखाए गए मार्ग पर श्रद्धा और विश्वास के साथ चलने का संदेश दिया। कार्यक्रम में अशोक जिंदल, अशोक खींची, कुसुम, उषा, कमलेश गुप्ता, राघव सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

गुरु पूर्णिमा पर कथक गुरु-शिष्य परंपरा का हुआ सम्मान, तीन पीढ़ियों ने लिया आशीर्वाद

जयपुर. शाबाश इंडिया

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर कथक की गुरु-शिष्य परंपरा का अनुपम दृश्य देखने को मिला। जयपुर घराने के वरिष्ठ कथक आचार्य एवं महागुरु श्री गिरधारी महाराज जी के कथक केंद्र पर नृत्य की तीन पीढ़ियां एक साथ उपस्थित हुईं और गुरु चरणों में वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर कथक गुरु श्री राजेन्द्र राव एवं उनके शिष्य उग्रसेन तंवर ने महागुरु श्री गिरधारी महाराज जी से आशीर्वाद प्राप्त कर गुरु-शिष्य परंपरा का निर्वहन किया। इसके उपरांत गुरु-शिष्य परंपरा के अनुसार कथक गुरु श्री राजेन्द्र राव ने अपने शिष्यों उग्रसेन तंवर, वंदना तंवर, संजना पंवार एवं प्रकाश शर्मा को आशीर्वाद प्रदान करते हुए उन्हें अपने गुरु, परिवार और जयपुर घराने की गौरवशाली परंपरा का नाम रोशन करने तथा कथक कला के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए समर्पित भाव से कार्य करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के दौरान गुरु-शिष्य परंपरा, भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों एवं कथक की समृद्ध विरासत के संरक्षण का संदेश भी दिया गया।

सिद्धचक्र महामंडल विधान का विश्व शांति महायज्ञ के साथ हुआ समापन

'गुरु ही जीवन का वास्तविक विकास करते हैं' : आर्यिका विज्ञाश्री माताजी

गुन्सी. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ, गुन्सीराज में परम पूज्य भारत गौरव आर्यिका रत्न 105 विज्ञाश्री माताजी ससंघ के पावन सान्निध्य में आयोजित श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का समापन विश्व शांति महायज्ञ एवं धार्मिक अनुष्ठानों के साथ श्रद्धा एवं भक्तिभावपूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरूआत प्रातः भगवान के अभिषेक एवं शांतिधारा से हुई। इसके पश्चात गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर अहमदाबाद निवासी दिनेश जी (जीतू) परिवार को आर्यिका माताजी का पाद प्रक्षालन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। धर्मसभा को संबोधित करते हुए आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ने कहा कि भगवान महावीर स्वामी के प्रथम गणधर गौतम स्वामी को गुरु की प्राप्ति का यह स्मरणीय दिवस गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है। यह पर्व संसार के समस्त गुरुओं के प्रति श्रद्धा, समर्पण और कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर है। उन्होंने कहा कि गुरु-शिष्य का संबंध निस्वार्थ भाव पर आधारित होता है। गुरु ही जीवन का वास्तविक विकास करते हैं और बिना किसी स्वार्थ के अपने शिष्यों को ज्ञान एवं सदाचार का मार्ग दिखाते हैं। संसार में यदि कोई सबसे पवित्र और अनूठा संबंध है, तो वह गुरु और शिष्य का है। प्रतीक जैन सेठी एवं विजय जैन ने बताया कि सिद्धचक्र महामंडल विधान के समापन पर विश्व शांति एवं मानव कल्याण की भावना से महायज्ञ का आयोजन किया गया। इसके साथ ही संगीतमय पूजन एवं वस्त्र भेंट का कार्यक्रम भी संपन्न हुआ। अशोक जैन ने बताया कि आगामी 2 अगस्त 2026 को परम पूज्य भारत गौरव आर्यिका रत्न 105 विज्ञाश्री माताजी का 55वां अवतरण दिवस श्रद्धा एवं उल्लास के साथ मनाया जाएगा।

सीआरडीएवी ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट में सुखमनी साहिब के पाठ के साथ नए शैक्षणिक सत्र का शुभारंभ

ऐलनाबाद (रमेश भार्गव)

सीआरडीएवी ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट में नए शैक्षणिक सत्र का शुभारंभ श्रद्धापूर्वक सुखमनी साहिब के पाठ के साथ किया गया। इस अवसर पर संस्थान के नवप्रवेशी विद्यार्थियों सहित विभिन्न महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं एवं स्टाफ सदस्यों ने पाठ में भाग लेकर गुरु चरणों में नतमस्तक होते हुए नए सत्र के सफल संचालन एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम में सीआरडीएवी गर्ल्स कॉलेज ऑफ एजुकेशन के प्राचार्य डॉ. रंजीत सिंह, डायरेक्टर डॉली मेहता तथा सीआरडीएवी स्कूल के प्राचार्य कमल मेहता विशेष रूप से उपस्थित रहे। वहीं सीआरडीएवी गर्ल्स कॉलेज के चेयरमैन ईश कुमार मेहता, प्रबंध निदेशक (एमडी) जगदीश मेहता एवं कार्यकारी निदेशक करुण मेहता ने भी पाठ में सहभागिता कर विद्यार्थियों को आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर संस्थान की शिक्षिकाएं दीपशिखा सरदाना, इंदू कामरा, प्रभजोत कौर, कंवलजीत कौर, गुरप्रीत, सपना, आराधना, शैफी सरदाना, पूजा, जैस्मिन, सिमरन, सोनाली, पल्लवी, नवदीप, किरण, दीपिंदर कौर, जसप्रीत, अजविंदर कौर एवं रेनू सहित अन्य स्टाफ सदस्याएं उपस्थित रहीं। वहीं स्टाफ सदस्यों में अनंत कथूरिया, अर्जुन सिंह, दिलप्रीत, जितेंद्र, करण, जगदीश, फकीर चंद एवं मनोज सहित अन्य सदस्य भी मौजूद रहे। सुखमनी साहिब के पाठ के उपरांत सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों, कर्मचारियों एवं उपस्थित गणमान्य अतिथियों ने श्रद्धापूर्वक प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम के अंत में सभी ने गुरु का आशीर्वाद प्राप्त करते हुए नए शैक्षणिक सत्र के सफल संचालन तथा विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना की।

श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर, वैशाली नगर में नौ दिवसीय श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का भव्य समापन

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर, वैशाली नगर में आयोजित नौ दिवसीय श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का हवन एवं विसर्जन के साथ भक्तिमय वातावरण में भव्य समापन हुआ। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने धर्मलाभ अर्जित करते हुए सिद्ध परमेष्ठियों की आराधना कर विश्व शांति, सुख-समृद्धि एवं आत्मकल्याण की मंगलकामना की। श्रीमती विनीता जैन ने बताया कि नौ दिवसीय श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का शुभारंभ ध्वजारोहण के साथ हुआ था। ध्वजारोहण का सौभाग्य श्री शांतिकुमार बोहरा एवं उनके परिवार को प्राप्त हुआ। आयोजन के अंतर्गत मुख्य कलश की स्थापना श्री अशोक जैन एवं श्रीमती संतोष पाटनी द्वारा विधि-विधानपूर्वक संपन्न कराई गई। उन्होंने बताया कि यह पावन विधान दिल्ली के प्रख्यात विद्वान पंडित श्री जयकुमार जैन शास्त्री के सान्निध्य एवं निर्देशन में आयोजित किया गया। नौ दिनों तक प्रतिदिन विधान, पूजन, अभिषेक, अर्घ्य समर्पण एवं विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ संपन्न हुए। श्री संदीप जैन ने बताया कि समापन से पूर्व श्रद्धालुओं द्वारा 1024 अर्घ्य समर्पित कर सिद्ध परमेष्ठियों की विशेष आराधना की गई। इस दौरान मंदिर परिसर भक्तिमय वातावरण एवं जयघोषों से गुंजायमान रहा तथा श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह देखने को मिला। श्रीमती संतोष पाटनी ने बताया कि संपूर्ण जैन समाज ने इस धार्मिक आयोजन में बढ़-चढ़कर सहभागिता निभाई तथा आयोजन को सफल बनाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया।

सिद्धचक्र महामंडल विधान में हवन की आहुतियों के साथ विश्व शांति की कामना

कुचामन सिटी. शाबाश इंडिया

श्री 1008 भगवान महावीर दिगंबर जैन मंदिर, डीडवाना रोड, कुचामन सिटी में विश्व शांति, सुख-समृद्धि एवं अमन-चैन की मंगलकामना के साथ आयोजित अष्टान्हिका पर्व के अंतर्गत नौ दिवसीय श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान का नवम एवं अंतिम दिवस श्रद्धा, भक्ति और धार्मिक उल्लास के साथ संपन्न हुआ। कलशाभिषेक एवं शांतिधारा का सौभाग्य श्रीमती मंजू देवी, विमल, अनिता, मुकेश, डिम्पल, अमित एवं नीलम काला परिवार (जिलीया) तथा श्रीमती सलोचना देवी, राजेश कुमार, ममता, मुकेश, सुमति, मनीषा, रितिक एवं भव्य गंगवाल परिवार (लादड़िया वालों) को प्राप्त हुआ। वहीं विधान समापन पर जलधारा का पुण्यार्जक बनने का सौभाग्य चिरंजीलाल, अशोक एवं भव्य पाटोदी परिवार को प्राप्त हुआ। सभी ने श्रद्धापूर्वक शांतिधारा कर धर्मलाभ अर्जित किया। लालचंद पहाड़िया एवं माणकचंद काला ने बताया कि अष्टान्हिका पर्व के दौरान सिद्धचक्र महामंडल

विधान का विशेष धार्मिक महत्व है। नवम दिवस पर कलशाभिषेक एवं नित्य नियम पूजन के उपरांत श्रद्धालुओं ने 1024 अर्घ्य समर्पित किए। इसके पश्चात विश्व में शांति, सद्भाव एवं अमन-चैन की स्थापना तथा समस्त प्राणियों के कल्याण की मंगलभावना के साथ हवन में आहुतियां अर्पित की गईं। इस अवसर पर ममता पांड्या ने शांतिधारा का वाचन किया।

हवन एवं पूजन-विधान में भंवरलाल, कमला झाझरी, माणकचंद, चंदा काला, सुरेशकुमार, संतोष पांड्या, तेजकुमार, शकुंतला बड़जात्या, लालचंद पहाड़िया, अमित पाटोदी, संतोष पहाड़िया, कमला देवी, हीरामणी, बबीता, कुसुम पाटोदी, शांति देवी, पुष्पा अजमेरा, मैना देवी, सुशीला, सलोचना, सरला, रेखा पहाड़िया, ज्ञानमती, आभा, हीरा, विनीता, ममता पांड्या, मंजू, संतोष, श्रीमती तारा देवी, महावीर प्रसाद काला, सुनीता गंगवाल एवं संतोष ठोल्या (नावा) सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने श्रद्धापूर्वक पूजन-विधान एवं हवन में भाग लेकर विश्व शांति और मानव कल्याण की कामना की।

'एक शाम किताबों के नाम' में पुस्तकों पर हुई सार्थक चर्चा

रचनात्मकता के लिए सांवेदिक उद्वेलन आवश्यक : अर्जुन ठाकुर

कोलकाता. शाबाश इंडिया। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के तत्वावधान में पुस्तकालय कक्ष में आयोजित 'एक शाम किताबों के नाम' कार्यक्रम के छठे संस्करण में साहित्य, पुस्तकों और रचनात्मकता पर सार्थक विमर्श हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यासागर सांध्य कॉलेज के असिस्टेंट प्रोफेसर अर्जुन ठाकुर ने की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में अर्जुन ठाकुर ने कहा कि रचनाकार अपनी भावनाओं को अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। रचनात्मकता के लिए सांवेदिक उद्वेलन आवश्यक है। उन्होंने चयनित पुस्तकों की विषयवस्तु, शिल्प एवं भाषा की विशेषताओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। साथ ही समीक्षकों की समालोचनात्मक टिप्पणियों की सराहना करते हुए कहा कि नई पीढ़ी का साहित्य यह विश्वास दिलाता है कि आने वाला समय उज्ज्वल होगा। कार्यक्रम में परमजीत कुमार पंडित की पुस्तक 'जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताओं में स्त्री चेतना', श्रीमती मीतू कानोडिया के काव्य-संग्रह 'हृदय पुष्प' तथा श्री धर्म दुबे की पुस्तक 'कुछ अपनी, कुछ आपकी' पर विशेष चर्चा हुई। लेखकों के वक्तव्य के पश्चात विद्यासागर कॉलेज की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. सुलेखा कुमारी, बैरकपुर राष्ट्रगुरु सुरेन्द्रनाथ कॉलेज के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. बिक्रम कुमार साव तथा ब्रोथवेट एंड कम्पनी लिमिटेड के कार्यकारी अधिकारी (प्रशासन) डॉ. आदित्य विक्रम सिंह ने समीक्षात्मक टिप्पणियां प्रस्तुत कीं। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा के अध्यक्ष महावीर प्रसाद बजाज ने कार्यक्रम की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सत्संग और स्वाध्याय से स्वाभिमान का निर्माण होता है। उन्होंने बताया कि 'एक शाम किताबों के नाम' का उद्देश्य महानगर के साहित्यकारों की नवप्रकाशित पुस्तकों पर गंभीर चर्चा का मंच उपलब्ध कराना है। इस मंच पर हिंदी के साथ-साथ भोजपुरी, मैथिली, राजस्थानी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की कृतियों पर भी विचार-विमर्श किया जाएगा।

गुरु पूर्णिमा पर आर्यिका नंदीश्वरमति माताजी ससंघ का भव्य पूजन, चौमूं में धर्ममय बना वातावरण

चौमूं. शाबाश इंडिया। परम पूज्य आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज के पट्टशिष्य आचार्य श्री भरत सागर जी महाराज की परम प्रभाविका शिष्या, बाल योगिनी, सरल स्वभावी, मोक्षमार्ग प्रकाशिका एवं प्रशांत निधि आर्यिका रत्न श्री 105 नंदीश्वरमति माताजी ससंघ वर्ष 2026 के वषायोग (चातुर्मास) के लिए चोमू में विराजमान हैं। फूलों की नगरी चोमू को माताजी का पावन सान्निध्य एवं मंगल आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। चातुर्मास समिति के प्रवक्ता पंकज बड़जात्या ने बताया कि गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर माताजी ससंघ के सान्निध्य में प्रातः अभिषेक, शांतिधारा, मंगलाचरण, चित्र अनावरण, दीप प्रज्वलन, पाद प्रक्षालन, शास्त्र भेंट, वस्त्र भेंट, देव-शास्त्र-गुरु पूजन, अष्टद्रव्य पूजन, महिला मंडल द्वारा मंगलगीत, प्रवचन, आरती एवं आहारचर्या सहित विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ संपन्न हुए। जैन समाज के मंत्री राजेंद्र पाटनी ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ किम्मी कासलीवाल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्वलन का सौभाग्य राजेंद्र कुमार, विनोद कुमार, मोहित कुमार एवं कुशल कुमार कासलीवाल को प्राप्त हुआ। पाद प्रक्षालन का सौभाग्य बोराज निवासी पंकज कुमार एवं उनके परिवार को मिला। शास्त्र भेंट का सौभाग्य मुकेश कुमार एवं मोहित कुमार पाटनी परिवार तथा वस्त्र भेंट का सौभाग्य कैलाश चंद्र एवं किशोर कुमार बड़जात्या परिवार को प्राप्त हुआ। उन्होंने बताया कि आगामी 2 अगस्त को आयोजित होने वाले मंगल कलश स्थापना महोत्सव में ध्वजारोहण का सौभाग्य बोराज निवासी पंकज कुमार लुहाड़िया परिवार को प्राप्त हुआ है। जैन समाज के अध्यक्ष राजेंद्र जैन एवं उपमंत्री सुरेश छाबड़ा ने बताया कि सायंकाल आरती, भजन एवं साज-बाजों के साथ आनंद यात्रा निकाली गई। कार्यक्रम में जैन समाज के पदमचंद जैन, पारसमल जैन, मोतीलाल पापड़ीवाल, हीरालाल बड़जात्या, सुरेंद्र काला, नरेंद्र बाकलीवाल, महेश छाबड़ा, सुनील सेठी, संदीप जैन, राजेंद्र जैन, अशोक जैन, अजय जैन, अनिल जैन, नेमीचंद, ताराचंद सहित अनेक समाजजन उपस्थित रहे।

गुरु पूर्णिमा पर गुरु-शिष्य परंपरा का संदेश, छात्राओं ने जाना महर्षि वेदव्यास का अमूल्य योगदान

ब्यावर. शाबाश इंडिया

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर श्री वर्द्धमान शिक्षण समिति द्वारा संचालित श्री वर्द्धमान पी.जी. कन्या महाविद्यालय में महिला पतंजलि योग समिति, जिला ब्यावर के तत्वावधान में प्रेरणादायी कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं को भारतीय संस्कृति में गुरु के सर्वोच्च स्थान, गुरु-शिष्य परंपरा के आदर्शों तथा महर्षि वेदव्यास के अनुपम योगदान से अवगत कराना था। कार्यक्रम में महिला पतंजलि योग समिति की जिला प्रभारी जसमीत कौर सलूजा ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि गुरु केवल ज्ञान प्रदान करने वाले शिक्षक नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा देने वाले प्रेरणास्रोत एवं व्यक्तित्व के शिल्पकार होते हैं। गुरु के मार्गदर्शन से ही व्यक्ति के जीवन में संस्कार, अनुशासन और सफलता का मार्ग प्रशस्त होता है।

उन्होंने छात्राओं से अपने गुरुजनों के प्रति सदैव श्रद्धा, सम्मान एवं कृतज्ञता का भाव बनाए रखने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि गुरु पूर्णिमा का पर्व महर्षि वेदव्यास की जयंती के रूप में भी मनाया जाता है। महर्षि वेदव्यास ने वेदों का संकलन एवं विभाजन कर भारतीय ज्ञान परंपरा को सुव्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया तथा महाभारत सहित अनेक महान ग्रंथों की रचना कर भारतीय संस्कृति को अमूल्य धरोहर प्रदान की। इसी कारण उन्हें 'आदि गुरु' के रूप में सम्मानित किया जाता है। उन्होंने कहा कि गुरु पूर्णिमा का यह पावन पर्व गुरुजनों के प्रति श्रद्धा, सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त करने का संदेश देता है। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.सी. लोढ़ा ने अपने उद्बोधन में कहा कि गुरु केवल शिक्षा देने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों, नैतिकता एवं संस्कारों का संवाहक होता है। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में गुरु की भूमिका सर्वोपरि है और गुरु के प्रति सम्मान तथा समर्पण की भावना ही भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी पहचान है। कार्यक्रम में लगभग 40 छात्राओं सहित महाविद्यालय के सभी व्याख्याताओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। इस दौरान योग, भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों तथा गुरु-शिष्य परंपरा की प्रासंगिकता पर भी विस्तार से प्रकाश डाला गया, जिससे छात्राओं को भारतीय जीवन मूल्यों को आत्मसात करने की प्रेरणा मिली। कार्यक्रम के अंत में छात्राओं ने अपने गुरुजनों के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान व्यक्त करते हुए उनके आदर्शों पर चलने तथा भारतीय संस्कृति के मूल्यों को जीवन में अपनाने का संकल्प लिया। प्रेरणा, संस्कार एवं सकारात्मक ऊर्जा से ओत-प्रोत यह आयोजन सौहार्दपूर्ण वातावरण में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

पूज्य पुलकसागर महाराज के सानिध्य में चातुर्मास के मंगल कलशों का हुआ शुद्धिकरण

गुरु पूर्णिमा पर सूर्यमहल में दर्शन-आशीर्वाद के लिए उमड़े श्रद्धालु

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर ट्रस्ट, मेन सेक्टर, शास्त्रीनगर के तत्वावधान में सकल दिगंबर जैन समाज द्वारा आयोजित चातुर्मास महोत्सव की तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं। सूर्यमहल में विराजमान ओजस्वी प्रवचनकार, प्रख्यात राष्ट्रसंत मनोज्ञाचार्य पूज्य गुरुदेव पुलकसागरजी महाराज ससंघ के दर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए गुरु पूर्णिमा के अवसर पर बुधवार को बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे। इस अवसर पर आगामी 2 अगस्त को होने वाली चातुर्मासिक मंगल कलश स्थापना के लिए स्थापित किए जाने वाले कलशों का शुद्धिकरण पूज्य गुरुदेव के सानिध्य में पुण्यार्जक परिवारों द्वारा संपन्न कराया गया। मुख्य मंगल कलश स्थापना का सौभाग्य तिलोकचंद छाबड़ा एवं सुरेन्द्र सुराणा परिवार को प्राप्त हुआ। चातुर्मास के पुण्यार्जक परिवारों में दिलीप, प्रवीण एवं नवीन चौधरी परिवार, नंदलाल-सुरेश कोठारी परिवार, सुशील-सुनील-लोकेन्द्र जैन परिवार, गुलाबचंद-मनीष शाह परिवार तथा निहालचंद-लोकेश अजमेरा परिवार को भी मंगल कलश स्थापना का सौभाग्य प्राप्त होगा। इनके अतिरिक्त लगभग 100 श्रावक परिवार भी चातुर्मास कलश स्थापना में सहभागी बनेंगे। श्री पुलकसागर चातुर्मास समिति के अध्यक्ष प्रवीण चौधरी ने बताया कि दीप प्रज्ज्वलन का सौभाग्य मुख्य कलश स्थापना परिवार तिलोकचंद छाबड़ा एवं सुरेन्द्र सुराणा परिवार को प्राप्त हुआ। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर पाद प्रक्षालन का सौभाग्य सुभाष कासलीवाल (बिजयनगर) एवं सुनील जैन (उदयपुर) को प्राप्त हुआ, जबकि शास्त्र भेंट का सौभाग्य ग्वालियर निवासी सुनील जैन परिवार को मिला। इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव पुलकसागरजी महाराज ने श्रद्धालुओं को गुरु पूर्णिमा की शुभकामनाएं देते हुए मंगलाशीष प्रदान किया तथा धर्म, संयम और आत्मकल्याण के मार्ग पर चलने का संदेश दिया। समिति के अध्यक्ष प्रवीण चौधरी ने बताया कि गुरुदेव 31 जुलाई तक प्रतिदिन प्रातः 8:30 बजे गुरु पूजन तथा प्रातः 9 से 10 बजे तक धर्म चर्चा के माध्यम से श्रद्धालुओं की जिज्ञासाओं का समाधान करेंगे। चातुर्मास समिति के संयोजक मनीष शाह ने बताया कि 1 अगस्त को दोपहर 2 बजे चित्रकूटधाम में गुरुदेव के सानिध्य में गुरु गुणानुवाद कार्यक्रम आयोजित होगा, जबकि 2 अगस्त को दोपहर 1 बजे चित्रकूटधाम में चातुर्मासिक मंगल कलश स्थापना समारोह संपन्न होगा।

श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया गुरु पूर्णिमा महोत्सव

जयपुर. शाबाश इंडिया। सांगानेरी गेट स्थित श्री अग्रसेन पब्लिक स्कूल में बुधवार को गुरु पूर्णिमा महोत्सव श्रद्धा, उल्लास एवं भव्यता के साथ महाराजा अग्रसेन ऑडिटोरियम में मनाया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने गुरु महिमा पर आधारित रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर उपस्थित अतिथियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों को भावविभोर कर दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ स्कूल प्रबंधन समिति के सचिव कमल नानूवाला, प्राचार्या अभिलाषा शैली तथा अन्य अतिथियों ने मां सरस्वती एवं गुरुदेव के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। इसके पश्चात विद्यार्थियों ने अतिथियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों का तिलक लगाकर स्वागत किया और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। उत्सव के दौरान छात्र-छात्राओं ने गुरु महिमा पर आधारित भजन, गीत एवं कविताओं की मनमोहक प्रस्तुतियां दीं, जिससे संपूर्ण वातावरण भक्तिमय हो उठा। विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत गुरु वंदना पर आधारित शास्त्रीय नृत्य ने सभी का मन मोह लिया। इसके साथ ही बच्चों ने एक प्रेरणादायक नाटक का मंचन कर समाज में गुरु के महत्व तथा प्राचीन गुरु-शिष्य परंपरा की अनमोल झलक प्रस्तुत की। नाटक के प्रभावशाली संवादों एवं सशक्त अभिनय ने दर्शकों को भावुक कर दिया। समारोह को संबोधित करते हुए स्कूल प्रबंधन समिति के सचिव कमल नानूवाला ने कहा कि भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान ईश्वर से भी श्रेष्ठ माना गया है। गुरु केवल अक्षर ज्ञान ही नहीं देते, बल्कि जीवन जीने की सही दिशा दिखाकर आदर्श नागरिक और सशक्त समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्राचार्या अभिलाषा शैली ने अपने प्रेरणादायी संबोधन में विद्यार्थियों से गुरुओं के बताए मार्ग पर चलने तथा जीवन में अनुशासन, संस्कार एवं सदाचार अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि गुरु की डांट-फटकार में भी शिष्य का हित और उज्ज्वल भविष्य निहित होता है। अंत में उन्होंने सभी अतिथियों, शिक्षकों, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों का आभार व्यक्त किया।

श्रीजी नगर, दुर्गापुरा में दिगंबर जैन महासमिति महिला आंचल की नई इकाई का गठन

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन महासमिति महिला आंचल, राजस्थान के तत्वावधान में श्रीजी नगर, दुर्गापुरा में नई महिला इकाई का गठन समारोह उत्साह एवं गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। महिला आंचल की प्रदेशाध्यक्ष श्रीमती शकुंतला बिंदायक ने कहा कि श्रीजी नगर की महिलाओं ने जिस उत्साह, समर्पण एवं एकजुटता के साथ संगठन से जुड़कर नई इकाई का गठन किया है, वह अत्यंत प्रेरणादायक है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह इकाई सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से समाजहित में उल्लेखनीय कार्य करेगी तथा संगठन को नई ऊर्जा प्रदान करेगी। इस अवसर पर नई कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए श्रीमती प्रियंका जैन को अध्यक्ष, श्रीमती मीनू जैन को मंत्री, श्रीमती प्रतिभा जैन को कोषाध्यक्ष, श्रीमती प्रेक्षा जैन को महिला प्रकोष्ठ मंत्री तथा श्रीमती गुंजन जैन को प्रकोष्ठ मंत्री का दायित्व सौंपा गया। समारोह में महासमिति की कोषाध्यक्ष श्रीमती उर्मिला जैन, श्रीमती सुलोचना जैन एवं श्रीमती अनीता जैन विशेष रूप से उपस्थित रहीं। सभी नवनियुक्त पदाधिकारियों का स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए उन्हें शुभकामनाएं दी गईं। साथ ही सेवा, संस्कार एवं संगठन की भावना के साथ समाजहित में सक्रिय भूमिका निभाने का संकल्प भी दिलाया गया।

अष्टानिका महापर्व का विश्व शांति महायज्ञ के साथ समापन

सिद्धचक्र महामंडल विधान में श्रद्धालुओं ने समर्पित किए 1024 अर्घ्य

जयपुर. शाबाश इंडिया। जैन धर्म के नौ दिवसीय शाश्वत अष्टानिका महापर्व का बुधवार को विश्व शांति महायज्ञ एवं पूर्णाहुति के साथ श्रद्धापूर्वक समापन हुआ। महापर्व के अंतिम दिन जयपुर के विभिन्न दिगंबर जैन मंदिरों में श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान, श्री 1008 नंदीश्वर महामंडल विधान एवं श्री 1008 इंद्रध्वज महामंडल विधान सहित विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया गया। सिद्धचक्र महामंडल विधान में श्रद्धालुओं ने मंत्रोच्चार के साथ 1024 अर्घ्य समर्पित कर विश्व शांति, सुख-समृद्धि एवं मानव कल्याण की मंगलकामना की। राजस्थान जैन युवा महासभा, जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा' ने बताया कि इस वर्ष तिथि वृद्धि के कारण अष्टानिका महापर्व नौ दिनों तक मनाया गया। इस दौरान शहर के दिगंबर जैन मंदिरों में प्रतिदिन विशेष पूजन, अभिषेक, शांतिधारा, सिद्धचक्र महामंडल विधान, संध्याकालीन महाआरती, भक्ति संध्या एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों सहित अनेक धार्मिक आयोजन हुए। उन्होंने बताया कि अष्टानिका महापर्व जैन धर्म का दूसरा प्रमुख पर्व माना जाता है और इन नौ दिनों में मंदिरों में धर्म एवं भक्ति का अनुपम वातावरण बना रहा।

कालाडेरा मंदिर में सात दशक से अधिक पुरानी परंपरा

श्री दिगंबर जैन मंदिर, गोपालजी का रास्ता (कालाडेरा) के मंत्री अशोक टकसाली ने बताया कि मंदिर में पिछले 70 वर्षों से भी अधिक समय से वर्ष में तीन बार–फाल्गुन, आषाढ़ एवं कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी से पूर्णिमा तक–आने वाले अष्टानिका महापर्व पर श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन निरंतर किया जा रहा है।

विभिन्न मंदिरों में हुए धार्मिक आयोजन

जगतपुरा जैन समाज के अध्यक्ष कमल वैद ने बताया कि श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, जगतपुरा में अष्टानिका महापर्व के अवसर पर भव्य सिद्धचक्र महामंडल विधान आयोजित हुआ। संयोजक राकेश पाटनी के अनुसार श्रद्धालुओं ने विधान के दौरान 1024 अर्घ्य समर्पित किए।

प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ में वर्षायोग स्थापना एवं गुरु पूर्णिमा महोत्सव श्रद्धापूर्वक संपन्न

ललितपुर. शाबाश इंडिया

मनोकामना-पूर्ण अतिशयकारी भगवान अरनाथ के एकमात्र प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ में बुधवार को संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर महाराज के शिष्य मुनि श्री सरलसागर महाराज के प्रभावक शिष्य मुनि श्री मंगलानंदसागर महाराज एवं मुनि श्री मंगलसागर महाराज के वर्षायोग (चातुर्मास) स्थापना समारोह का आयोजन सकल दिगंबर जैन समाज के तत्वावधान में श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ संपन्न हुआ। प्रचार मंत्री डॉ. सुनील जैन 'संचय' ने बताया कि इस अवसर पर हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात तथा दिल्ली सहित देश के विभिन्न राज्यों से आए श्रद्धालुओं ने अपने गुरुदेव के प्रति अटूट श्रद्धा व्यक्त करते हुए जिनवाणी भेंट कर धर्मलाभ अर्जित किया। चरण प्रक्षालन का सौभाग्य राहुल जैन एवं उनके परिवार (फरीदाबाद) को प्राप्त हुआ। जिनवाणी भेंट करने का सौभाग्य ब्रह्मचारी जयकुमार निशांत, शिखरचंद जैन एवं श्रीमती पुष्पा जी पुष्प परिवार तथा गिरीश कुमार जैन एवं श्रीमती पूनम देवी (अहमदाबाद) को प्राप्त हुआ। अपने मंगल प्रवचनों में मुनि श्री मंगलानंदसागर महाराज ने कहा कि चातुर्मास केवल साधु-संतों की साधना का काल नहीं, बल्कि श्रावकों के लिए भी आत्मसंयम, स्वाध्याय एवं धमाराधना का विशेष अवसर है। उन्होंने कहा कि वषार्काल में अनावश्यक समारंभों एवं हिंसात्मक प्रवृत्तियों से बचते हुए प्रत्येक कार्य विवेकपूर्वक करना चाहिए, ताकि सूक्ष्म जीवों की अनावश्यक विराधना न हो। उन्होंने कहा कि आज भौतिक चकाचौंध के प्रभाव से केवल श्रावक जीवन ही नहीं, बल्कि साधुचर्या में भी कहीं-कहीं शिथिलाचार का प्रवेश दिखाई देता है। अनेक धार्मिक आयोजन अर्थप्रधान होते जा रहे हैं, जबकि उनका मूल उद्देश्य अध्यात्म, आत्मचिंतन, स्वाध्याय एवं सम्यक आचरण होना चाहिए। उन्होंने श्रद्धालुओं से जैन धर्म के सिद्धांतों को जीवन में आत्मसात कर मोक्षमार्ग पर अग्रसर होने का आह्वान किया।